Media Coverage of the Founder's Day Celebration of the Dayalbagh Educational Institute (Deemed to be University) on January 31, 2025

Founder's Day will be celebrated in DEI on 31st January

https://www.youtube.com/watch?v=PCr54-m48go

https://www.youtube.com/watch?v=Yd9MnuJO0KA

https://www.youtube.com/watch?v=UoGGjliSGH4

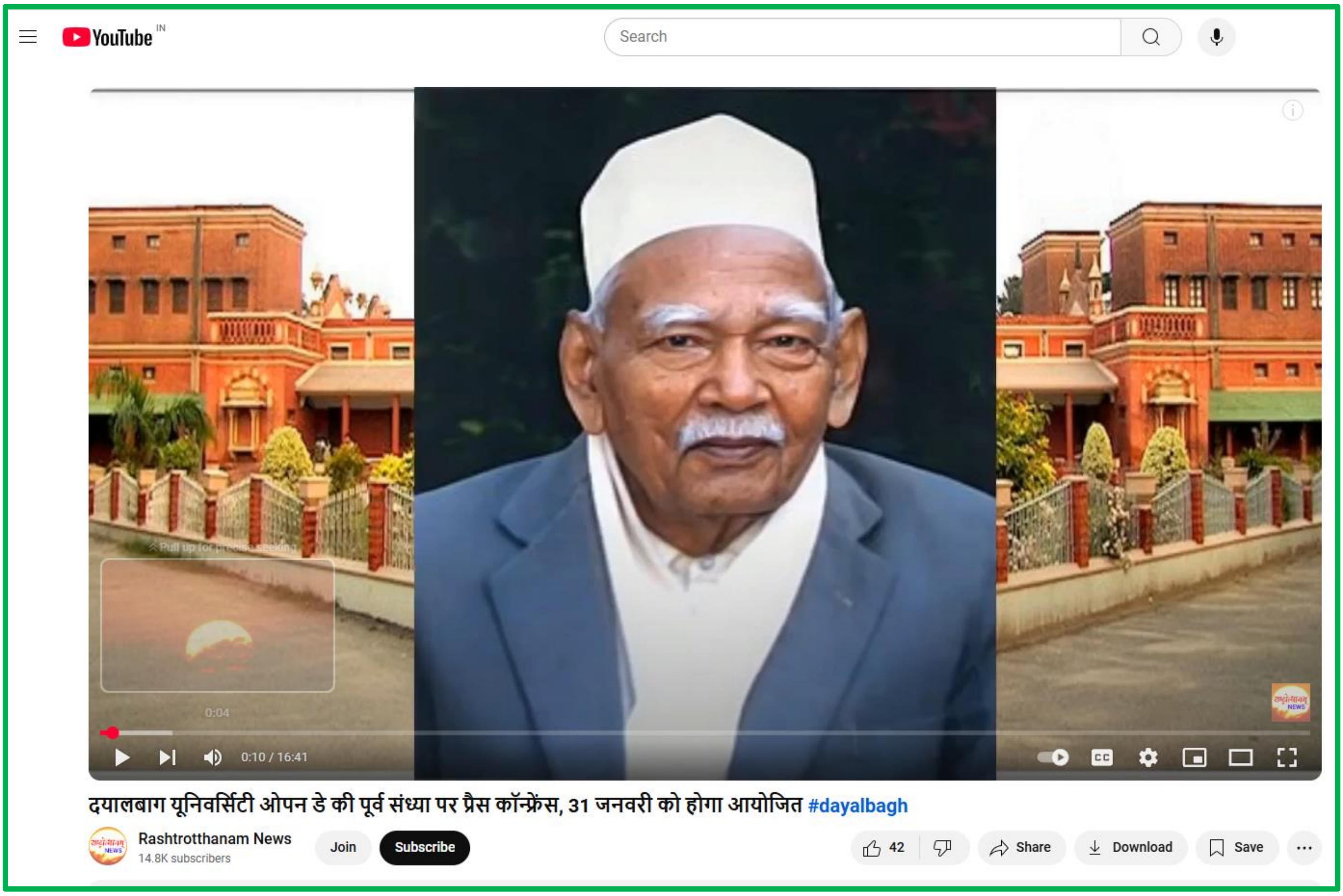

दयालबाग यूनिवर्सिटी ओपन डे की पूर्व संध्या पर प्रेस कॉन्फ्रेंस, 31 जनवरी को होगा आयोजित #dayalbagh

https://www.youtube.com/watch?v=5rMMqZde0Bs

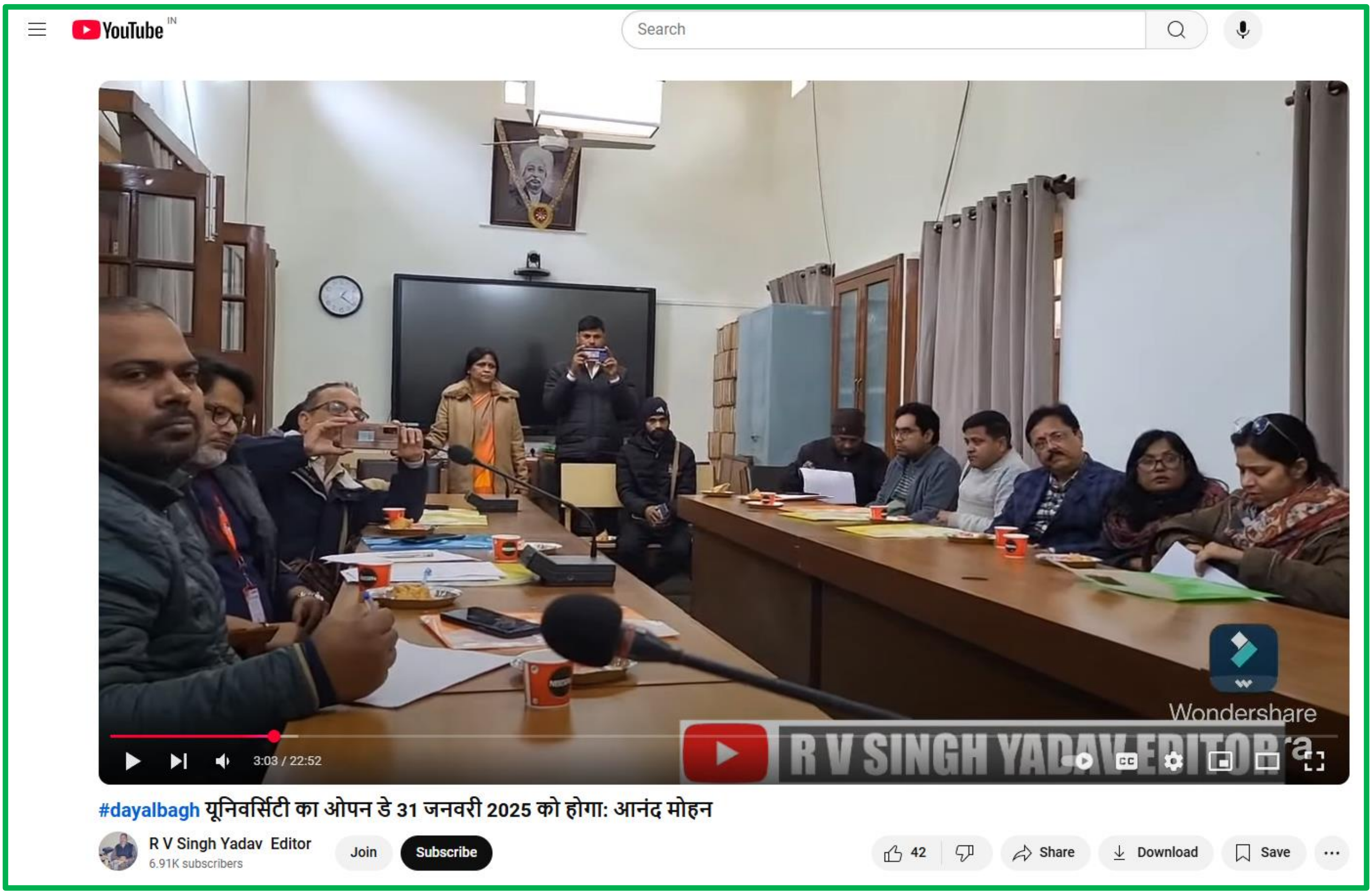

#dayalbagh यूनिवर्सिटी का ओपन डे 31 जनवरी 2025 को होगा: आनंद मोहन

https://www.youtube.com/watch?v=ljOEXcl7GZ4

डीईआई 31 को मनाएगा संस्थापक दिवस समारोह

Sanjay Tiwari
January 29, 2025

आगरा, 29 जनवरी। दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी) में संस्थापक दिवस 31 जनवरी को मनाया जाएगा। इस दिन सुबह छह बजे से दोपहर तीन बजे तक विभिन्न कार्यक्रम होंगे।
डीईआई कुलसचिव प्रो आनंद मोहन, समन्वयक संगीता सैनी और प्रो राधाकृष्ण ने बुधवार को प्रेस वार्ता में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि इस दौरान केंद्रीय प्रदर्शनी मैदान पर सभी फैकल्टी के काउंटर लगाए जाएंगे, जिनमें उनकी उपलब्धियों के बारे में बताया जाएगा। इसके अलावा दयालबाग में निर्मित होने वाले विभिन्न उत्पादों की बिक्री के साथ ही खानपान के काउंटर भी लगाए जाएंगे। इनकी संख्या 51 तक होगी।

https://newsnazariyaa.blogspot.com/2025/01/31.html?m=1

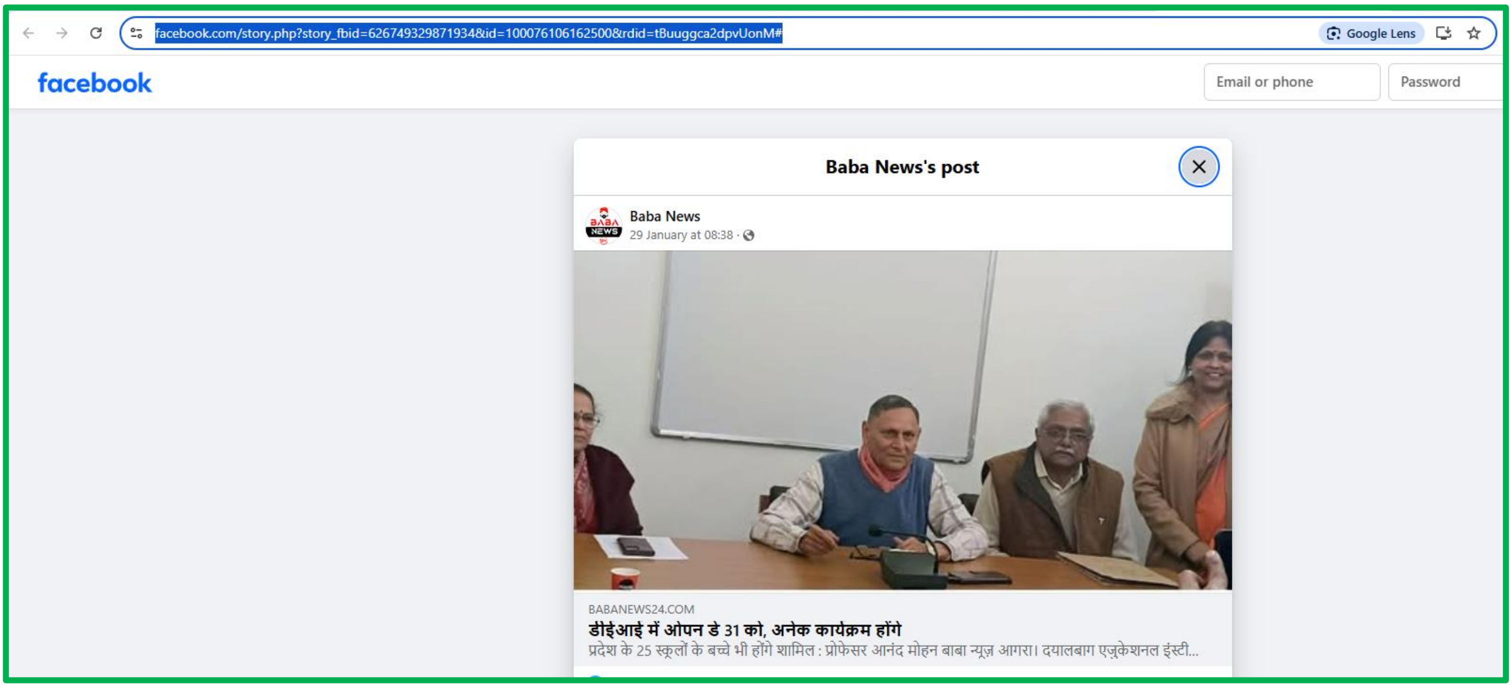

https://www.facebook.com/story.php?story_fbid=626749329871934&id=100076106162500&rdid=tBuuggca2dpvUonM#

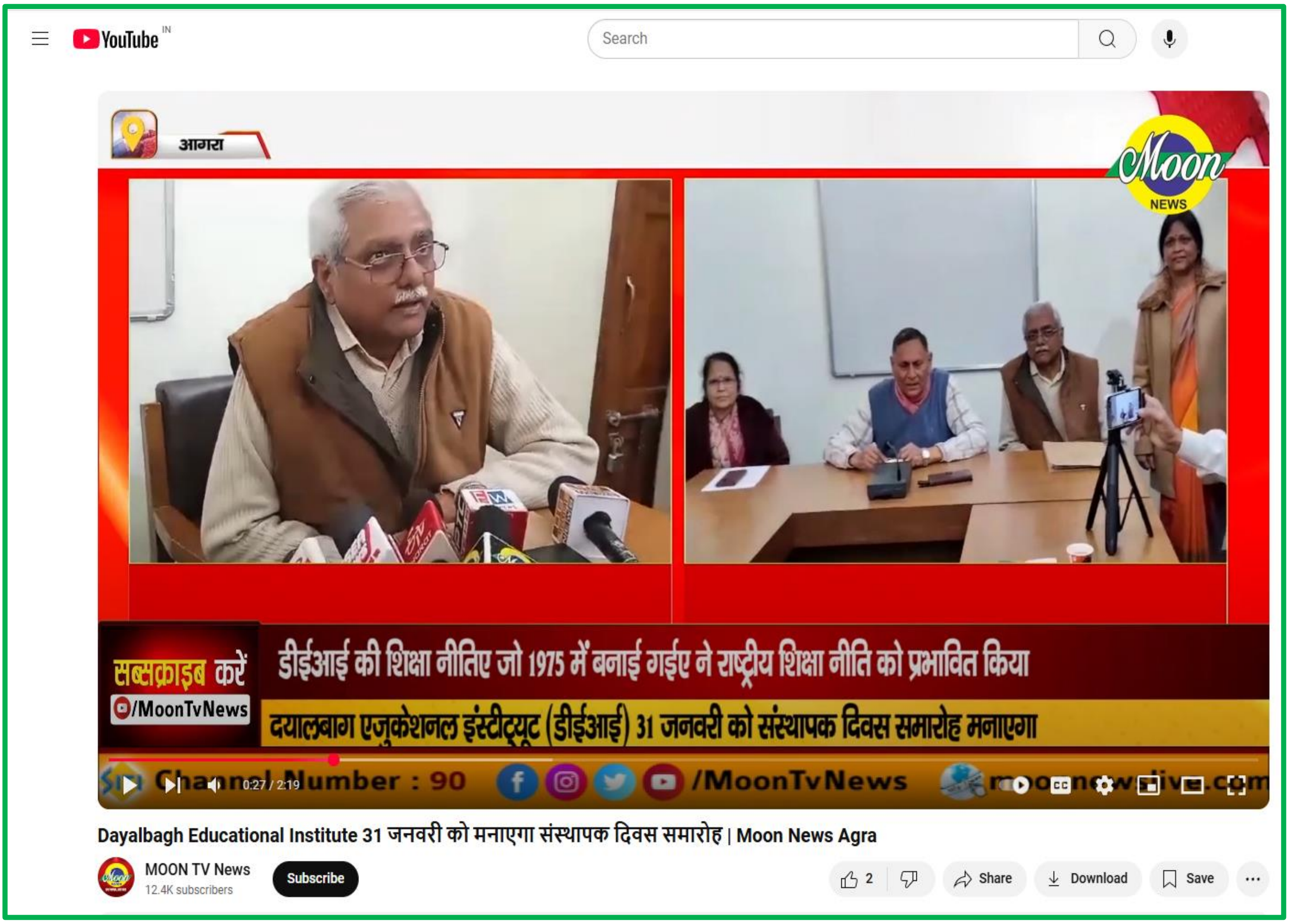

Dayalbagh Educational Institute 31 जनवरी को मनाएगा संस्थापक दिवस समारोह | Moon News Agra

https://www.youtube.com/watch?v=cm_C93tLH9I

डीईआई में मना संस्थापक दिवस

https://www.youtube.com/watch?v=MDJbka27tj0

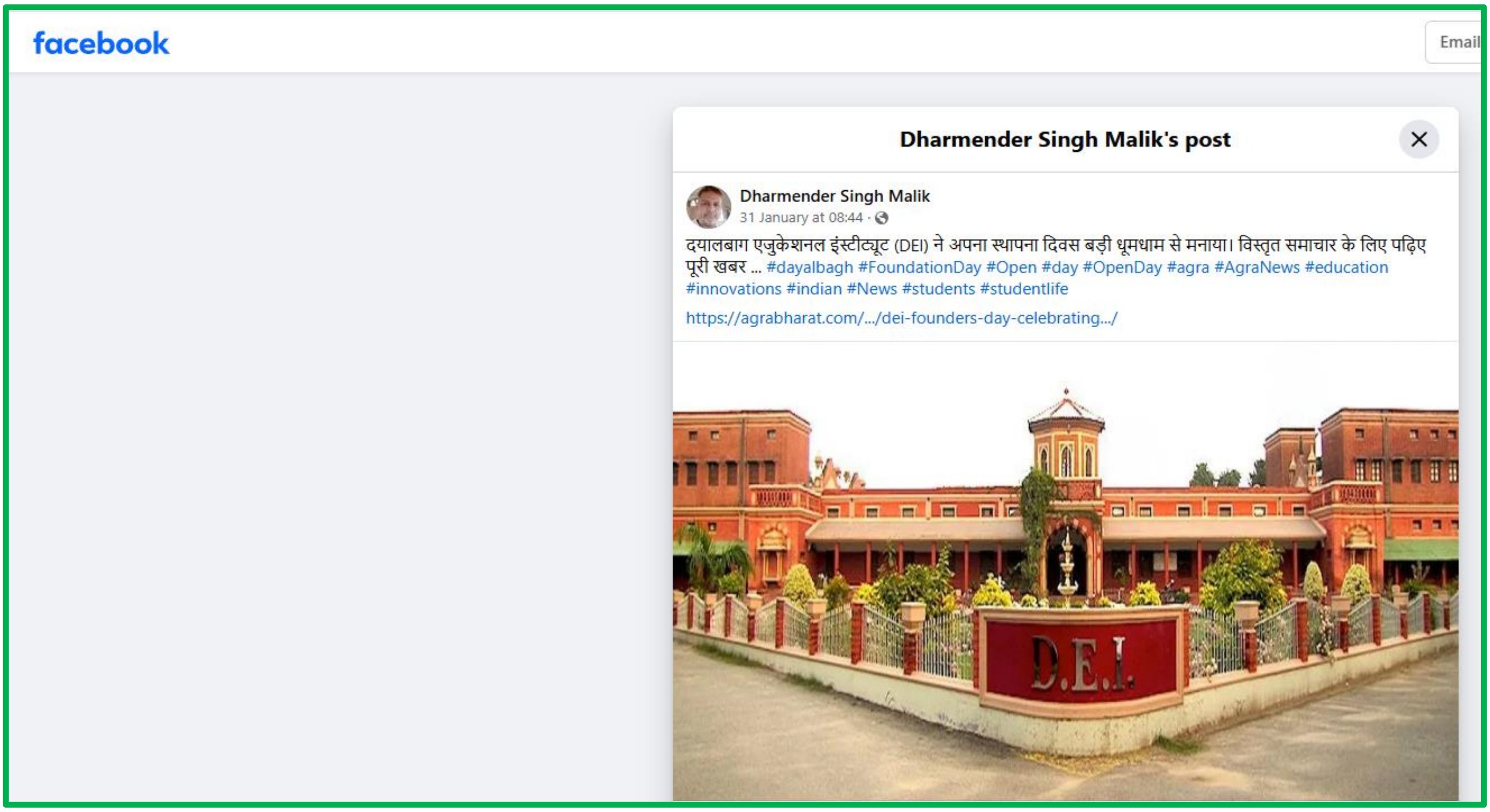

https://www.facebook.com/822484763/posts/10162254051454764/?rdid=mohK1NoGlnbpE4Aq#

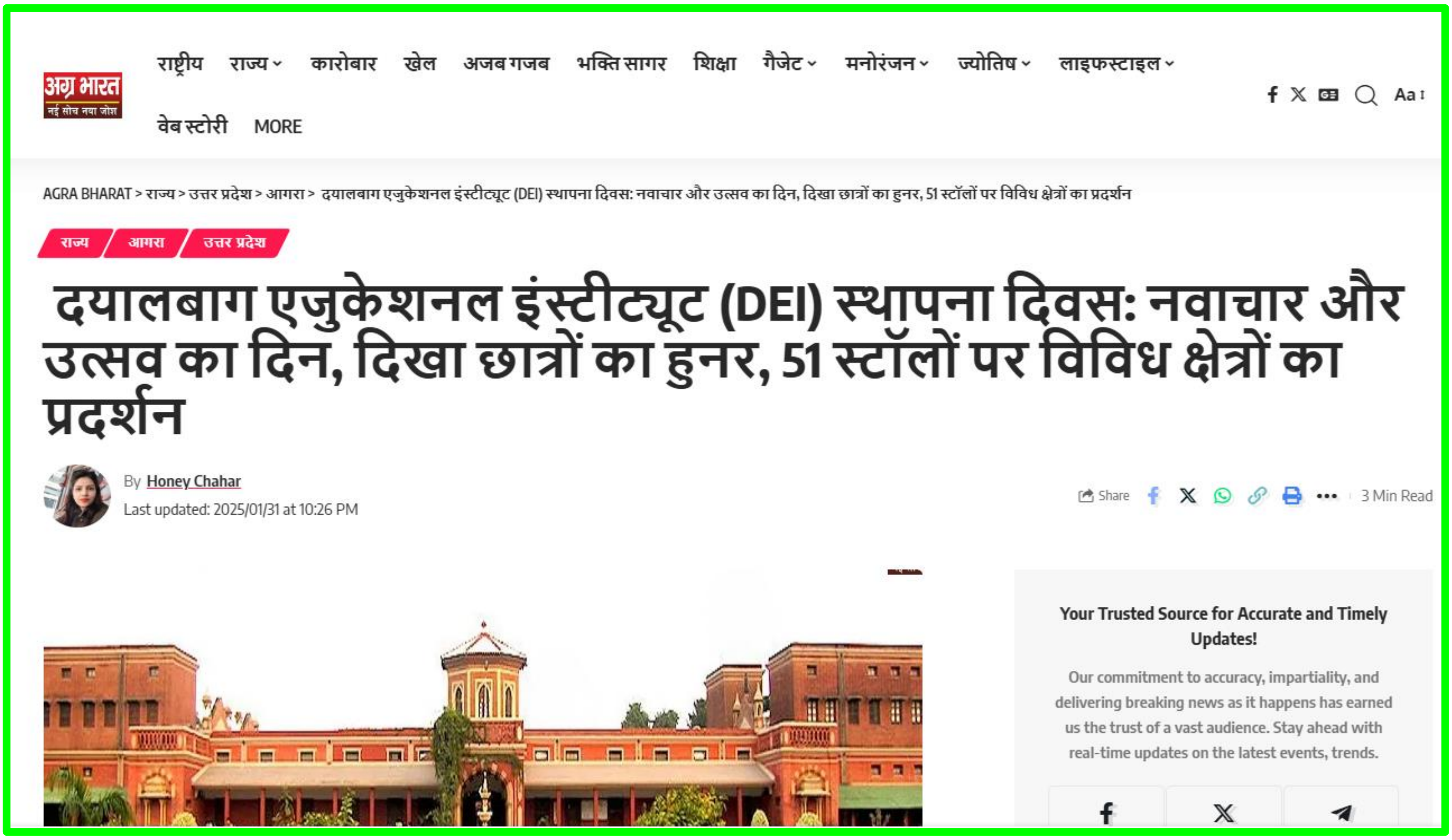
अग्र भारत
नई सोच नया जोश
राष्ट्रीय राज्य कारोबार खेल अजब गजब भक्ति सागर शिक्षा गैजेट मनोरंजन ज्योतिष लाइफस्टाइल
वेब स्टोरी MORE

AGRA BHARAT > राज्य > उत्तर प्रदेश > आगरा > दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (DEI) स्थापना दिवस: नवाचार और उत्सव का दिन, दिखा छात्रों का हुनर, 51 स्टॉलों पर विविध क्षेत्रों का प्रदर्शन

राज्य आगरा उत्तर प्रदेश

दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (DEI) स्थापना दिवस: नवाचार और उत्सव का दिन, दिखा छात्रों का हुनर, 51 स्टॉलों पर विविध क्षेत्रों का प्रदर्शन

By Honey Chahar
Last updated: 2025/01/31 at 10:26 PM

Share 3 Min Read

Your Trusted Source for Accurate and Timely Updates!

Our commitment to accuracy, impartiality, and delivering breaking news as it happens has earned us the trust of a vast audience. Stay ahead with real-time updates on the latest events, trends.

https://agrabharat.com/state/dei-founders-day-celebrating-education-and-innovation/

SEA NEWS UP UK LIVE 24x7 हिंदी समाचार : Watch Live News in Hindi | Breaking News | UP/UK News Today

https://www.youtube.com/live/QTA_yxRKi6g

DEI दयालबाग में मनाया गया ओपन डे (Part-1) छात्रों ने लगायीं आकर्षक प्रदर्शनी । #Dayalbagh News

https://www.youtube.com/watch?v=MH1cr3PCE0U

https://www.bhaskar.com/local/uttar-pradesh/agra/news/innovation-seen-on-dei-foundation-day-in-agra-134390824.html?_branch_match_id=1415577890807630974&utm_campaign=134390824&utm_medium=sharing&_branch_referrer=H4sIAAAAAAAAA8soKSkottLXT0nMzMvM1kvKSCzOTizSS87P1XexMCwLTy3ycwpMsq8rSk1LLSrKzEuPTyrKLy9OLbJ1zijKz00FANSOCZRAAAAA

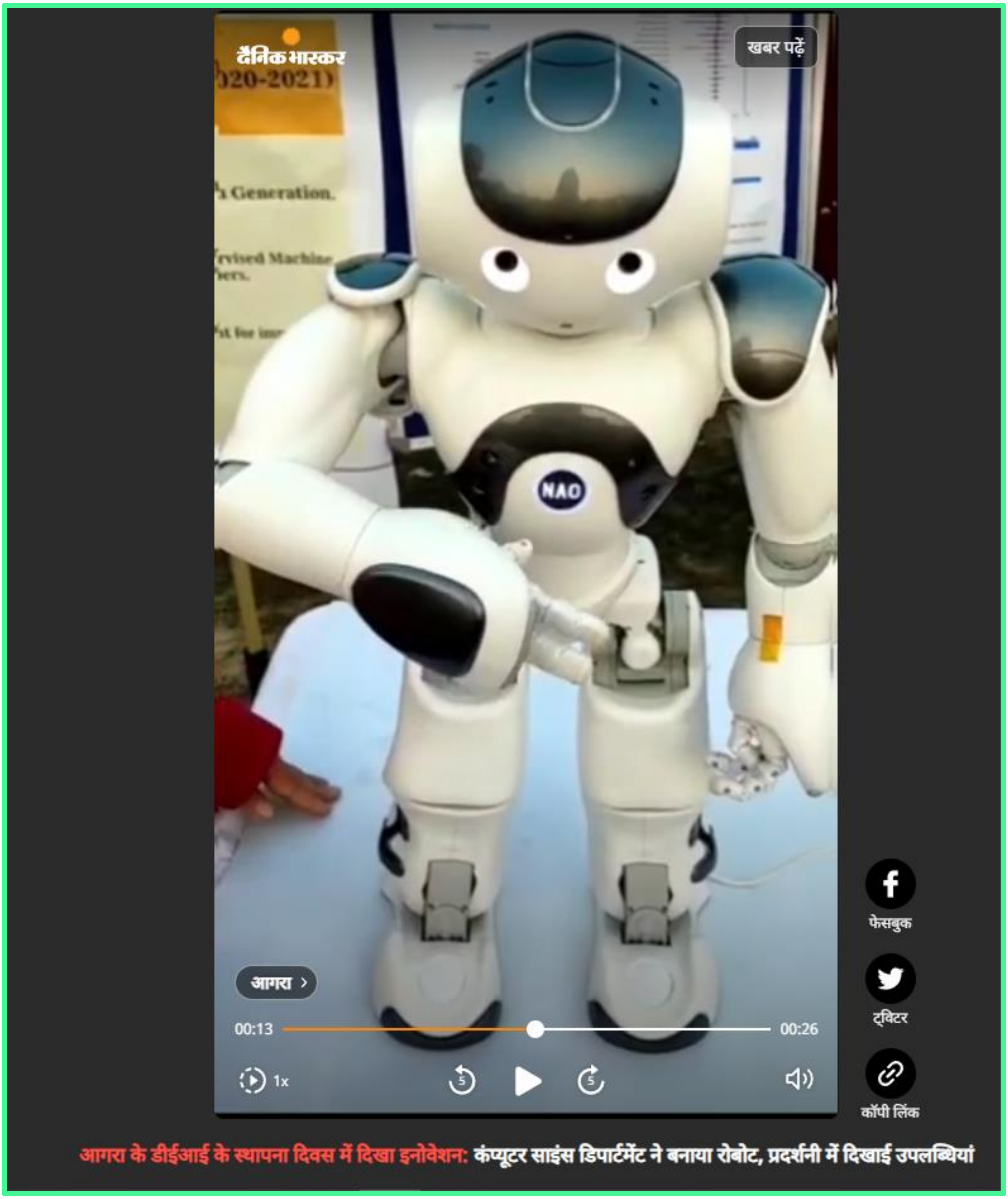

https://www.bhaskar.com/local/uttar-pradesh/agra/video/innovation-seen-on-dei-foundation-day-in-agra-134390824.html?type=video

दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट ने धूमधाम से मनाया स्थापना दिवस

https://www.youtube.com/watch?v=XywOy_F9h3Y

शुक्रवार 31 जनवरी 2025 श्योपुर एक्सप्रेस

दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट में 31 जनवरी को संस्थापक दिवस समारोह

पूज्य डॉ. एम. बी. लाल साहब के विजन, मूल्यों और विरासत को श्रद्धांजलि

निज संवाददाता

दयालबाग के शांत वातावरण में स्थित, दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीईआई) के लिए हर साल संस्थापक दिवस 31 जनवरी का विशेष महत्व है। 31 जनवरी का पावन दिवस, दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी) के संस्थापक निदेशक, परम गुरु हुजूर डॉ. एम. बी. लाल साहब का शुभ जन्मदिन है, यह दिन उनके पावन चरणकमलों में श्रद्धांजलि अर्पित करने एवं उत्सव मनाने का एक विशेष दिन है।

डीईआई की शिक्षा नीति (1975), जिसकी कल्पना और क्रियान्वयन डीईआई (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी) के सर्वोच्च वास्तुकार और संस्थापक निदेशक पूज्य डॉ. मकुंद बिहारी लाल साहब, दयालबाग में रा-धा-स्व-आ-मी मत के सातवें आध्यात्मिक आचार्य, ने की थी, 1986 और 2020 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति का अग्रदूत है। इस दूरदर्शी दृष्टिकोण ने डीईआई को राष्ट्रीय एजेंडे से कई साल पहले शैक्षिक सुधारों की कल्पना करते हुए एक प्रर्वतक के रूप में स्थापित किया। डीईआई का शैक्षिक ढांचा अपनी विशिष्ट विशेषताओं द्वारा चिह्नित है, जो एक पूर्ण व्यक्ति या सुपरह्यूमन के समग्र विकास पर जोर देता है। सुपरमैन बनाने की प्रक्रिया को सुपरह्यूमन इवोल्यूशनरी स्कीम के माध्यम से नए सिरे से बल मिला है। दुनिया भर में फैले ये सुपरह्यूमन, अपने जीवन की प्रारंभिक अवस्था से ही सत्संग संस्कृति को आत्मसात कर रहे हैं, और ये सुपरह्यूमन, भविष्य में विश्व स्तर पर, दयालबाग जीवन शैली के राजदूत के रूप में, मानवता को सही मायने में सतत विकास का सही रास्ता दिखायेंगे। डीईआई की शिक्षा नीति के अंतःविषय-विकल्प, कार्य-आधारित प्रशिक्षण और मुख्य पाठ्यक्रम यह सुनिश्चित करते हैं कि छात्रों को न केवल शैक्षणिक उत्कृष्टता प्राप्त हो, बल्कि वे व्यावहारिक कौशल, सांस्कृतिक शिक्षा और सामाजिक जिम्मेदारी की भावना से भी ओतप्रोत हों। आधुनिक स्वास्थ्य सेवा आवास और आत्मरक्षा का मॉडल मानवता के लाभ के लिए और उसके बाद सभी जीवित प्राणियों के लाभ के लिए दुनिया के सभी हिस्सों को कवर करने के लिए क्यूरेट और स्केल-अप करने के लिए तैयार है। ब्रह्मांड के सभी जीवित प्राणी सर्वशक्तिमान ईश्वर की रचना हैं। लिंग-निरपेक्ष भाव से, समस्त मानव जाति की बेहतर सांसारिकता हेतु, समाज के -अंतिम, न्यूनतम, निम्नतम और गुमशुदा- व्यक्ति की सेवा करते हुए, अलौकिक प्राणियों और फिर सभी जीवित प्राणियों की सेवा की ओर बढ़ने का हमारा महान लक्ष्य, दयालबाग जीवन पद्धति को प्रदर्शित करता है। इस संपूर्ण स्पेक्ट्रम को शुरू से अंत तक सर्वोत्कृष्टता के माध्यम से कवर करता है। यह कोई भव्य समापन नहीं है, बल्कि एक ऐसी प्रक्रिया है जो सभी जीवित प्राणियों की मुक्ति तक जारी रहेगी, जिसमें कोई भी निवासी निचले ध्रुव पर नहीं छोड़ा जाएगा।

दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट में संस्थापक दिवस केवल एक अनुष्ठान नहीं है, यह परम गुरु हुजूर डॉ. एमबी लाल साहब के दूरदर्शी पथ-प्रदर्शन और समग्र शिक्षा के प्रति डीईआई की स्थायी प्रतिबद्धता की मान्यता के लिए एक श्रद्धांजलि है। इस दिन, छात्र अपनी परियोजनाओं, सांस्कृतिक कार्यक्रमों, पाइप संगीत, उद्यमशीलता और अभिनव परिणामों को प्रदर्शित करके अपनी प्रतिभा और रचनात्मकता का प्रदर्शन करके सक्रिय रूप से भाग लेते हैं। यह उत्सव संस्थान की एकता, सहयोग और सफलता की भावना का प्रतीक है। जैसे-जैसे डीईआई मूल्य-आधारित शिक्षा, अनुसंधान और रचनात्मक गतिविधियों के माध्यम से अपने छात्रों की क्षमता को उजागर करना जारी रखता है, यह संस्थापक दिवस, प्रेरणा, प्रतिबद्धता और आने वाले सभी समय के लिए दिन दूनी रात चौगुनी विकास के आशीर्वाद हेतु उनके प्रति कृतज्ञता का प्रतीक है।

मुरैना, शुक्रवार 31 जनवरी 2025 | सच टाइम्स

दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट में 31 जनवरी को संस्थापक दिवस समारोह

पूज्य डॉ. एम. बी. लाल साहब के विजन, मूल्यों और विरासत को श्रद्धांजलि

आगरा(निज संवाददाता)। दयालबाग के शांत वातावरण में स्थित, दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीईआई) के लिए हर साल संस्थापक दिवस 31 जनवरी का विशेष महत्व है। 31 जनवरी का पावन दिवस, दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी) के संस्थापक निदेशक, परम गुरु हुजूर डॉ. एम. बी. लाल साहब का शुभ जन्मदिन है, यह दिन उनके पावन चरणकमलों में श्रद्धांजलि अर्पित करने एवं उत्सव मनाने का एक विशेष दिन है।

डीईआई की शिक्षा नीति (1975), जिसकी कल्पना और क्रियान्वयन डीईआई (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी) के सर्वोच्च वास्तुकार और संस्थापक निदेशक पूज्य डॉ. मकुंद बिहारी लाल साहब, दयालबाग में रा-धा-स्व-आ-मी मत के सातवें आध्यात्मिक आचार्य, ने की थी, 1986 और 2020 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति का अग्रदूत है। इस दूरदर्शी दृष्टिकोण ने डीईआई को राष्ट्रीय एजेंडे से कई साल पहले शैक्षिक सुधारों की कल्पना करते हुए एक प्रवर्तक के रूप में स्थापित किया। डीईआई का शैक्षिक ढांचा अपनी विशिष्ट विशेषताओं द्वारा चिह्नित है, जो एक पूर्ण व्यक्ति या सुपरह्यूमन के समग्र विकास पर जोर देता है। सुपरमैन बनाने की प्रक्रिया को सुपरह्यूमन इवोल्यूशनरी स्कीम के माध्यम से नए सिरे से बल मिला है। दुनिया भर में फैले ये सुपरह्यूमन, अपने जीवन की प्रारंभिक अवस्था से ही सत्संग संस्कृति को आत्मसात कर रहे हैं, और ये सुपरह्यूमन, भविष्य में विश्व स्तर पर, दयालबाग जीवन शैली के राजदूत के रूप में, मानवता को सही मायने में सतत विकास का सही रास्ता दिखायेंगे। डीईआई की शिक्षा नीति के अंतःविषय-विकल्प, कार्य-आधारित प्रशिक्षण और मुख्य पाठ्यक्रम यह सुनिश्चित करते हैं कि छात्रों को न केवल शैक्षणिक उत्कृष्टता प्राप्त हो, बल्कि वे व्यावहारिक कौशल, सांस्कृतिक शिक्षा और सामाजिक जिम्मेदारी की भावना से भी ओतप्रोत हों। आधुनिक स्वास्थ्य सेवा आवास और आत्मरक्षा का मॉडल मानवता के लाभ के लिए और उसके बाद सभी जीवित प्राणियों के लाभ के लिए दुनिया के सभी हिस्सों को कवर करने के लिए क्यूरेट और स्केल-अप करने के लिए तैयार है। ब्रह्मांड के सभी जीवित प्राणी सर्वशक्तिमान ईश्वर की रचना हैं। लिंग-निरपेक्ष भाव से, समस्त मानव जाति की बेहतर सांसारिकता हेतु, समाज के -अंतिम, न्यूनतम, निम्नतम और गुमशुदा- व्यक्ति की सेवा करते हुए, अलैंगिक प्राणियों और फिर सभी जीवित प्राणियों की सेवा की ओर बढ़ने का हमारा महान लक्ष्य, दयालबाग जीवन पद्धति को प्रदर्शित करता है। इस संपूर्ण स्पेक्ट्रम को शुरू से अंत तक सर्वोत्कृष्टता के माध्यम से कवर करता है। यह कोई भव्य समापन नहीं है, बल्कि एक ऐसी प्रक्रिया है जो सभी जीवित प्राणियों की मुक्ति तक जारी रहेगी, जिसमें कोई भी निवासी निचले ध्रुव पर नहीं छोड़ा जाएगा।

दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट में संस्थापक दिवस केवल एक अनुष्ठान नहीं है; यह परम गुरु हुजूर डॉ. एमबी लाल साहब के दूरदर्शी पथ-प्रदर्शन और समग्र शिक्षा के प्रति डीईआई की स्थायी प्रतिबद्धता की मान्यता के लिए एक श्रद्धांजलि है। इस दिन, छात्र अपनी परियोजनाओं, सांस्कृतिक कार्यक्रमों, पाइप संगीत, उद्यमशीलता और अभिनव परिणामों को प्रदर्शित करके अपनी प्रतिभा और रचनात्मकता का प्रदर्शन करके सक्रिय रूप से भाग लेते हैं। यह उत्सव संस्थान की एकता, सहयोग और सफलता की भावना का प्रतीक है। जैसे-जैसे डीईआई मूल्य-आधारित शिक्षा, अनुसंधान और रचनात्मक गतिविधियों के माध्यम से अपने छात्रों की क्षमता को उजागर करना जारी रखता है, यह संस्थापक दिवस, प्रेरणा, प्रतिबद्धता और आने वाले सभी समय के लिए दिन दूनी रात चौगुनी विकास के आशीर्वाद हेतु उनके प्रति कृतज्ञता का प्रतीक है।

TNF Today | आगरा | https://tnftoday.com/epaper | टी.एन.एफ. टुडे | 03
आगरा | शुक्रवार 31 जनवरी 2025

दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट में 31 जनवरी को संस्थापक दिवस समारोह

पूज्य डॉ. एम. बी. लाल साहब के विजन, मूल्यों और विरासत को श्रद्धांजलि

टी.एन.एफ. टुडे ब्यूरो

आगरा। दयालबाग के शांत वातावरण में स्थित, दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीईआई) के लिए हर साल संस्थापक दिवस 31 जनवरी का विशेष महत्व है। 31 जनवरी का पावन दिवस, दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी) के संस्थापक निदेशक, परम गुरु हुजूर डॉ. एम. बी. लाल साहब का शुभ जन्मदिन है, यह दिन उनके पावन चरणकमलों में श्रद्धांजलि अर्पित करने एवं उत्सव मनाने का एक विशेष दिन है।

डीईआई की शिक्षा नीति (1975), जिसकी कल्पना और क्रियान्वयन डीईआई (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी) के सर्वोच्च वास्तुकार और संस्थापक निदेशक पूज्य डॉ. मकुंद बिहारी लाल साहब, दयालबाग में रा-धा-स्व-आ-मी मत के सातवें आध्यात्मिक आचार्य, ने की थी, 1986 और 2020 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति का अग्रदूत है। इस दूरदर्शी दृष्टिकोण ने डीईआई को राष्ट्रीय एजेंडे से कई साल पहले शैक्षिक सुधारों की कल्पना करते हुए एक प्रवर्तक के रूप में स्थापित किया। डीईआई का शैक्षिक ढांचा अपनी विशिष्ट विशेषताओं द्वारा चिह्नित है, जो एक पूर्ण व्यक्ति या सुपरह्यूमन के समग्र विकास पर जोर देता है। सुपरमैन बनाने की प्रक्रिया को सुपरह्यूमन इवोल्यूशनरी स्कीम के माध्यम से नए सिरे से बल मिला है। दुनिया भर में फैले ये सुपरह्यूमन, अपने जीवन की प्रारंभिक अवस्था से ही सत्संग संस्कृति को आत्मसात कर रहे हैं, और ये सुपरह्यूमन, भविष्य में विश्व स्तर पर, दयालबाग जीवन शैली के राजदूत के रूप में, मानवता को सही मायने में सतत विकास का सही रास्ता दिखायेंगे। डीईआई की शिक्षा नीति के अंतःविषय-विकल्प, कार्य-आधारित प्रशिक्षण और मुख्य पाठ्यक्रम यह सुनिश्चित करते हैं कि छात्रों को न केवल शैक्षणिक उत्कृष्टता प्राप्त हो, बल्कि वे व्यावहारिक कौशल, सांस्कृतिक शिक्षा और सामाजिक जिम्मेदारी की भावना से भी ओतप्रोत हों। आधुनिक स्वास्थ्य सेवा आवास और आत्मरक्षा का मॉडल मानवता के लाभ के लिए और उसके बाद सभी जीवित प्राणियों के लाभ के लिए दुनिया के सभी हिस्सों को कवर करने के लिए क्यूरेट और स्केल-अप करने के लिए तैयार है। ब्रह्मांड के सभी जीवित प्राणी सर्वशक्तिमान ईश्वर की रचना हैं। लिंग-निरपेक्ष भाव से, समस्त मानव जाति की बेहतर सांसारिकता हेतु, समाज के ष्अंतिम, न्यूनतम, निम्नतम और गुमशुदाष् व्यक्ति की सेवा करते हुए, अलैंगिक प्राणियों और फिर सभी जीवित प्राणियों की सेवा की ओर बढ़ने का हमारा महान लक्ष्य, दयालबाग जीवन पद्धति को प्रदर्शित करता है। इस संपूर्ण स्पेक्ट्रम को शुरू से अंत तक सर्वोत्कृष्टता के माध्यम से कवर करता है। यह कोई भव्य समापन नहीं है, बल्कि एक ऐसी प्रक्रिया है जो सभी जीवित प्राणियों की मुक्ति तक जारी रहेगी, जिसमें कोई भी निवासी निचले ध्रुव पर नहीं छोड़ा जाएगा।

दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट में संस्थापक दिवस केवल एक अनुष्ठान नहीं हैय यह परम गुरु हुजूर डॉ. एमबी लाल साहब के दूरदर्शी पथ-प्रदर्शन और समग्र शिक्षा के प्रति डीईआई की स्थायी प्रतिबद्धता की मान्यता के लिए एक श्रद्धांजलि है। इस दिन, छात्र अपनी परियोजनाओं, सांस्कृतिक कार्यक्रमों, पाइप संगीत, उद्यमशीलता और अभिनव परिणामों को प्रदर्शित करके अपनी प्रतिभा और रचनात्मकता का प्रदर्शन करके सक्रिय रूप से भाग लेते हैं। यह उत्सव संस्थान की एकता, सहयोग और सफलता की भावना का प्रतीक है। जैसे-जैसे डीईआई मूल्य-आधारित शिक्षा, अनुसंधान और रचनात्मक गतिविधियों के माध्यम से अपने छात्रों की क्षमता को उजागर करना जारी रखता है, यह संस्थापक दिवस, प्रेरणा, प्रतिबद्धता और आने वाले सभी समय के लिए दिन दूनी रात चौगुनी विकास के आशीर्वाद हेतु उनके प्रति कृतज्ञता का प्रतीक है।

वंदे मातरम, बापू में था दम

टी.एन.एफ. टुडे ब्यूरो

आगरा। कुष्ठ सेवा सदन, पूर्वीगेट, ताजमहल, आगरा में 'लैप्रोसी पेशेन्ट्स वेलफेयर सोसाइटी' के तत्वावधान में राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के परिनिर्वाण दिवस के अवसर पर गुरुवार को 'कुष्ठ निवारण दिवस' मनाया गया। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि डॉ0 शालिनी सिंह, निदेशक, राष्ट्रीय जालमा कुष्ठ एवं अन्य माइक्रोबैक्टीरियल रोग संस्थान, ताजगंज, आगरा थीं एवं अध्यक्षता प्रो0 एस0पी0 सिंह बघेल, राज्यमंत्री, भारत सरकार ने की। कार्यक्रम का उद्घाटन मुख्य अतिथि एवं अध्यक्ष द्वारा महात्मा गाँधी के चित्र पर माल्यार्पण एवं उनके समक्ष दीप प्रज्वलित कर किया गया। तत्पश्चात दो मिनट का मौन रखकर गांधी जी को श्रद्धांजलि दी गई एवं कल्पना शर्मा द्वारा रामधुन का गायन किया गया।

इस अवसर पर पुस्तिका 'एक सफर तिरस्कार से सत्कार तक' का विमोचन किया गया। सचिव डॉ0 मधु भारद्वाज ने बताया कि पुस्तिका में कुष्ठ रोग के लक्षण एवं विभिन्न अवस्थाओं की जानकारी दी गई है।

डॉ0 मधु भारद्वाज ने कहा कि यह बिल्डिंग 1861 की बनी हुई है, जिसमें कुष्ठ रोगियों को निःशुल्क रहने, खाने-पीने एवं दैनिक आवश्यक सामान की व्यवस्था शहर के दानदाताओं द्वारा की जाती है। यह बिल्डिंग 164 वर्ष पुरानी है, जिसमें यह सोसाइटी पिछले 18 वर्षों से कुष्ठ रोगियों के लिए सेवा कार्य कर रही है। कुष्ठ सेवा सदन कुष्ठ रोगियों के लिए घर जैसा है। साथ ही उन्होंने भविष्य में होने वाले कार्यक्रमों की योजनाओं के बारे में जानकारी दी।

डॉ0 राजेन्द्र मिलन ने 'बढ़ते आतंकवाद पर गाँधी दर्शन ही समुचित है' कविता प्रस्तुत की। डॉ0 शशि गुप्ता ने 'वंदे मातरम, बापू में था दम' कविता प्रस्तुत की। डॉ0 राजेन्द्र शर्मा 'रवि' एवं शरद गुप्ता ने भी गाँधी जी पर काव्य पाठ किया।

सोसाइटी के उपाध्यक्ष डॉ0 ए0एस0 सचान ने अतिथियों का स्वागत एवं परिचय दिया। साथ ही सोसाइटी के अतीत की भी जानकारी दी और भविष्य में इसी प्रकार कुष्ठ रोगियों की सेवा करने का आश्वासन दिया। उन्होंने कहा कि सामाजिक कार्य हम सबके सहयोग से ही संभव हो पाते हैं।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि डॉ0 शालिनी सिंह, निदेशक, राष्ट्रीय जालमा कुष्ठ एवं अन्य माइक्रोबैक्टीरियल रोग संस्थान, ताजगंज, आगरा ने अपने उद्बोधन में कहा कि कुष्ठ रोगियों की सेवा के लिए प्रोजेक्ट पर कार्य कर रही हूँ। आशान्वित हूँ कि सरकार हमारी मदद करेगी।

सह-अध्यक्षीय उद्बोधन में डॉ0 डी0वी0 शर्मा, वरिष्ठ अस्थि रोग विशेषज्ञ ने कहा कि राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी को श्रद्धांजलि देते हुए मुझे सोसाइटी के पूर्व सचिव डॉ0 वेद भारद्वाज की बहुत याद आ रही है। कुष्ठ रोगियों की सेवा करने की प्रेरणा मुझे उनसे ही मिली।

कार्यक्रम के अध्यक्ष प्रो0 एस0पी0 सिंह बघेल, राज्यमंत्री, भारत सरकार ने कहा कि गाँधी जी के चरणों में आगरा की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ। ऐसे लोग रोज पैदा नहीं होते। गाँधी तो गाँधी था, दूसरा पैदा नहीं हो सकता।

विशिष्ट अतिथि श्री जे0एस0 फौजदार ने कहा गाँधी जी शांति, सत्य एवं अहिंसा के दूत थे। हमें उनके दर्शाए मार्ग पर चलना चाहिए।

विशिष्ट अतिथि डॉ0 पंकज नगायच ने कहा कि मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम ने भी शबरी के जूठे बेर खाकर एवं केवट की नाव में बैठकर सामाजिक समरसता का संदेश दिया था, इसलिए कुष्ठ रोगियों की सेवा ही हमारे लिए सर्वोपरि ध्येय होना चाहिए।

इस अवसर पर नीलम शर्मा, शैलजा अग्रवाल, कल्पना शर्मा, डॉ0 रामप्रकाश, संजय चोपड़ा, वी0के0 गुप्ता, जी0एस0 मनराल, मनीष सुराना, रतन देव, पं0 बृजदत्त शर्मा, के0के0 मोहन्ती, ममता अरोड़ा, दीपा बिष्ट, इन्दिरा, शशि शिरोमणि, अनिल शर्मा, संजय गुप्त आदि उपस्थित रहे।

कार्यक्रम आयोजित कराने में कु0 गरिमा भारद्वाज, कु0 उपलब्धि भारद्वाज एवं दिवाकर बघेल का विशेष सहयोग रहा। कार्यक्रम के अंत में अतिथियों को प्रतीक चिन्ह प्रदान किए गए। धन्यवाद ज्ञापन डॉ0 आर0सी0 अग्रवाल द्वारा किया गया।

#dayalbagh डिस्टेंस सेंटरो पर भी ओपन डे मैनपुरी मथुरा के हज़ारो स्टूडेंटस आये #surekhayadav के साथ

https://www.youtube.com/watch?v=UoGGjliSGH4

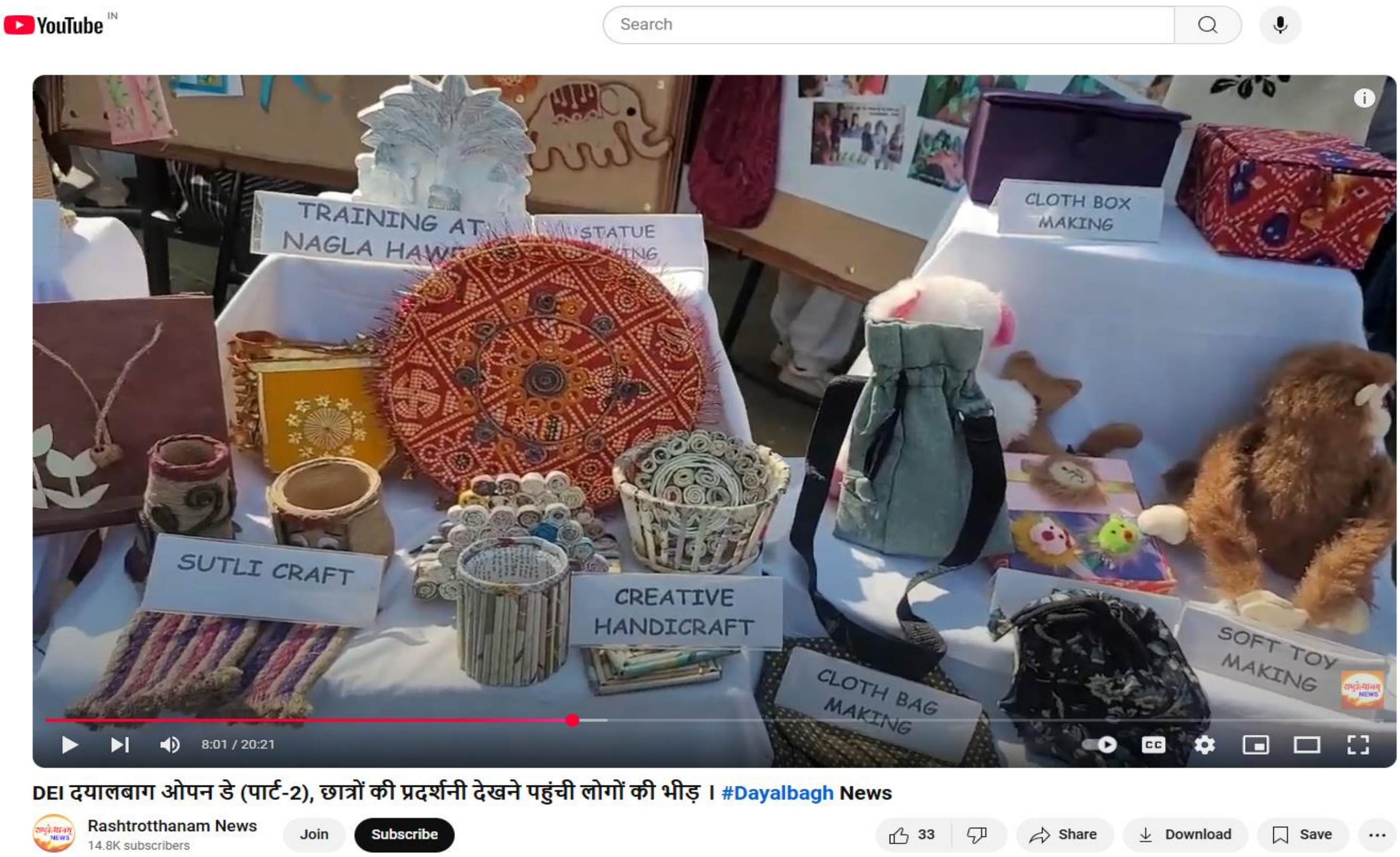

DEI दयालबाग ओपन डे (पार्ट-2), छात्रों की प्रदर्शनी देखने पहुंची लोगों की भीड़ I #Dayalbagh News

DEI दयालबाग ओपन डे पर नेहरू नगर सेंटर के छात्रों ने दिखाई प्रतिभा I #Dayalbagh News

https://www.youtube.com/watch?v=rmCZiEiaWS4

डीईआई में कल मनेगा संस्थापक दिवस

दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीईआइ) में संस्थापक दिवस 31 जनवरी को मनाया जाएगा. कार्यक्रम को खास बनाने के लिए तैयारियां शुरू हो गई हैं. शुक्रवार सुबह छह बजे से दोपहर तीन बजे तक विभिन्न कार्यक्रम होंगे. बुधवार को आयोजित प्रेस वार्ता में डीईआइ के कुलसचिव प्रो. आनंद मोहन ने बताया कि केंद्रीय प्रदर्शनी मैदान पर सभी फैकल्टी के काउंटर जागेंगे. सभी काउंटर में उनकी उपलब्धियों के बारे में बताया जाएगा. साथ दयालबाग के विभिन्न उत्पादों की बिक्री के साथ ही खानपान के 51 काउंटर भी लगेंगे. यह दिवस दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट के संस्थापक निदेशक, परम गुरु हुजूर डा. एमबी लाल साहब के जन्मदिवस पर मनाया जाता है. प्रदेश के करीब 25 स्कूलों को भी आमंत्रित किया गया है. प्रत्येक स्कूल के प्रतिनिधिमंडल में 25 से 120 तक बच्चे हो सकते हैं. मौके पर समन्वयक संगीता सैनी, प्रो. राधाकृष्ण, कविता रायजादा मौजूद रही .

ओपन डे में खुलेंगे डीईआई के द्वार

31 जनवरी को किया जाएगा ओपन डे का आयोजन

आगरा, वरिष्ठ संवाददाता। दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीईआई) के द्वार आम लोगों के लिए खुलेंगे। 31 जनवरी को संस्थान अपना ओपन डे आयोजित करेगा। इसमें संस्थान में हो रही पढ़ाई, शोध कार्य और अविष्कार से लेकर संस्थान की ओर से लाए जा रहे बदलावों को देख सकेंगे। संस्थान में फाउंडर डे की जानकारी दी गयी।

संस्थान के कुलसचिव डॉ. आनंद मोहन ने कहा कि डीईआई छात्रों को वर्ल्ड क्लास शिक्षा दे रहा है। इसके साथ ही छात्रों में नैतिक मूल्यों का विकास कर रहा है। संस्थान की विभिन्न फैकल्टी में होने वाले कार्यों को देखने का अवसर ओपन डे (फाउंडर डे) में मिलेगा। संस्थान में संचालित पाठ्यक्रमों के बारे में पूरी जानकारी सभी फैकल्टी एक ही स्थान पर देंगी। इसके लिए 51 स्टॉल ओपन डे में लगेंगी। ओपन डे में इस बार आगरा मंडल के विभिन्न विद्यालयों के छात्र भी शामिल होंगे। ओपन डे की समन्वयक प्रो. संगीता सैनी ने बताया कि इस बार डीईआई की सात फैकल्टी सहित संस्था से जुड़े 12 संस्थान अपने कार्य को प्रदर्शित करेंगे। सह समन्वयक डॉ. एम. राधाकृष्ण ने बताया कि ओपन डे के दौरान छात्र अपने वर्किंग, नॉन वर्किंग मॉडल प्रस्तुत करेंगे। इसके साथ ही पोस्टर और पेपर के माध्यम से भी संस्थान के गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा कार्यो को प्रदर्शित करेंगे। इसके साथ ही डीईआई की ओर से तैयार किए गए उत्पाद, ऑर्गेनिक खेती के उत्पाद भी बिक्री के लिए उपलब्ध होंगे। इस मौके पर मीडिया समन्वयक कविता रायजादा उपस्थित रहीं।

डीईआई ने 'स्थापना दिवस' मनाया

संस्थापक दिवस समारोह, जिसे ओपन डे के रूप में भी जाना जाता है, में डीईआई के छात्रों, शिक्षकों और कर्मचारियों द्वारा की गई उपलब्धियों और पहलों का शानदार प्रदर्शन हुआ। पूरा परिसर गतिविधियों, प्रदर्शनों और रंग-बिरंगी सजावट से जीवंत हो उठा, जिससे अपार खुशी और उत्सव का माहौल बन गया। इस वर्ष के उत्सव में डीईआई के छात्रों की लगन और कड़ी मेहनत को प्रदर्शित किया गया, जिन्होंने अपने अभिनव प्रोजेक्ट और रचनात्मक कार्यों को विभिन्न मीडिया जैसे कि ग्राफिकल चार्ट, वर्किंग मॉडल, डिस्प्ले बोर्ड और इंटरएक्टिव गतिविधियों के माध्यम से प्रस्तुत किया। डीईआई में संकाय और केंद्रीय स्थानों दोनों पर व्यवस्था की रूपरेखा सावधानीपूर्वक बनाई गई थी, जिससे आगरा के आम लोगों और आमंत्रित आगंतुकों को अध्ययन और कार्य के विभिन्न क्षेत्रों में नई पहल और उच्च प्रदर्शन का पता लगाने का मौका मिला।

कुल 51 स्टॉल लगाए गए थे, जिनमें कपड़ा, सिरेमिक और मिट्टी के बर्तन, जैविक खेती, कृषि प्रौद्योगिकी, ग्रीन हाउस प्रौद्योगिकी, पेटेंट, प्लेसमेंट, अनुसंधान, डेयरी प्रौद्योगिकी, 3-डी प्रिंटिंग, नैनो और क्वांटम विज्ञान, चेतना, ड्रोन, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस ऑनलाइन और दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम, चमड़ा प्रौद्योगिकी, अनुपम उपवन, उन्नत भारत अभियान, पूर्व छात्र नेटवर्क, कौशल विकास, खाद्य प्रसंस्करण, चिकित्सा शिविर, डीईआई शिक्षा नीति, डीईआई का इतिहास और केंद्रीय प्रशासन, प्रवेश और परीक्षा सहित कई अन्य क्षेत्रों से संबंधित मॉडल और गतिविधियों का प्रदर्शन किया गया। उत्तर प्रदेश के लगभग 50 स्कूलों के युवा स्कूली बच्चों ने भी परिसर का दौरा किया और डीईआई के कार्यों और उपलब्धियों का शानदार प्रदर्शन देखा, जिससे उन्हें अपने भविष्य के शैक्षणिक कैरियर और पेशेवर विकल्पों की योजना बनाने में भी मदद मिली। कुल मिलाकर, लगभग 10,000 लोग इस अवसर पर एकत्रित हुए और डीईआई परिसर का दौरा किया। डीईआई के छात्रों और कर्मचारियों द्वारा सुबह से देर दोपहर तक भक्ति संगीत का पाठ पूरे परिसर में गूंजता रहा, जिससे गहन दिव्यता और भक्ति का माहौल बन गया।

इस महत्वपूर्ण अवसर पर दयालबाग के कृषि-सह-परिशुद्धता खेती प्रक्षेत्र पर सुबह बुलाई गई सलाहकार समिति की बैठक के दौरान शिक्षा सलाहकार समिति के अध्यक्ष परम श्रद्धेय प्रोफेसर पी.एस. सत्संगी साहब की सम्मानित उपस्थिति ने इस अवसर की शोभा बढ़ाई। यह सभा विशेष रूप से डीईआई में उच्च शिक्षा कार्यक्रम का नेतृत्व करने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका के लिए श्रद्धेय डॉ. एमबी लाल साहब के चरण कमलों में हार्दिक श्रद्धा और कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए बुलाई गई थी। यह बैठक समग्र शैक्षिक कार्यक्रमों के कार्यान्वयन के माध्यम से प्राप्त असाधारण प्रगति को उजागर करने के लिए एक मंच के रूप में कार्य करती है। दयालबाग शैक्षणिक संस्थानों की शिक्षा सलाहकार समिति के अध्यक्ष परम पूज्य प्रोफेसर पी.एस. सत्संगी साहब के दिव्य मार्गदर्शन में इन कार्यक्रमों ने और अधिक प्रगति की और नवाचार के साथ उत्कृष्टता प्राप्त की है।

इस विशेष अवसर पर, प्रो. सत्संगी ने अपने अमृतमय भाषण में, सर्वोच्च आध्यात्मिकता के भंडार के उच्चतम निवास से लगातार निकलने वाली 'धुन' (आध्यात्मिक ध्वनि या जाप) के सर्वोत्कृष्ट महत्व पर प्रकाश डाला, जिसे परम पुरुष पूरन धनी हुजूर स्वामी जी महाराज द्वारा दयालबाग, आगरा में स्थापित 'रा-धा-स्व-आ-मी' मत में वैज्ञानिक रूप से समझाया गया है। परम पूज्य प्रोफेसर पी.एस. सत्संगी साहब द्वारा दिए गए अमूल्य समय और आशीर्वाद ने संस्थापक दिवस समारोह में एक गहन आध्यात्मिक आयाम जोड़ा। संस्थापक दिवस समारोह ने अपनी शानदार विरासत का सम्मान करने और अपने दूरदर्शी नेताओं के उदार मार्गदर्शन में समग्र शिक्षा के सिद्धांतों को बनाए रखने के लिए डीईआई की गहरी प्रतिबद्धता का उदाहरण दिया। डीईआई में संस्थापक दिवस केवल एक उत्सव नहीं है; यह उत्कृष्टता, नवाचार और अपने छात्रों के सर्वांगीण विकास के लिए संस्थान की प्रतिबद्धता का प्रमाण है। यह कार्यक्रम छात्रों को अपनी प्रतिभा दिखाने, एक-दूसरे से सीखने और संस्थान के विकास और प्रगति में योगदान देने के लिए एक सहकारी और सहयोगी मंच प्रदान करता है।

इस अवसर पर, डीईआई के प्रतिष्ठित कार्यक्रमों के अलावा, डॉ. बानी दयाल धीर द्वारा हाल ही में लॉन्च की गई पुस्तक **"Travel Diaries with My Beloved Nana-Nani"** की जानकारी भी साझा की गई। डॉ. बानी, जो डीईआई में अंग्रेजी विभाग की सहायक प्रोफेसर हैं, ने इस पुस्तक में अपनी नाना-नानी के साथ की गई यात्रा के दौरान मिली अनमोल जीवन की सीखों और आशीवार्दों को साझा किया है। यह पुस्तक राधास्वामी मत के दृष्टिकोण से आध्यात्मिक स्थलों के महत्व को उजागर करती है और परिवार, विशेष रूप से नाना-नानी के साथ बिताए गए समय की अमूल्य महत्ता को दर्शाती है। डॉ. बानी की नानी को सत्संग जगत में 'रानी माँ' के रूप में सम्मानित किया जाता है, और उनके नाना राधास्वामी मत के 8वें संत सतगुरु के रूप में पूज्य हैं। इस पुस्तक में भारतीय संस्कृति, आध्यात्मिकता और जीवन के उच्चतम आदर्शों को प्रस्तुत किया गया है, जो डीईआई के छात्रों के लिए प्रेरणा का एक और स्रोत है।

Travel Diaries with My Beloved Nana-Nani न केवल एक यात्रा वृत्तांत है, बल्कि यह जीवन को समझने, परिवार के बंधनों की कद्र करने और अपने आध्यात्मिक और सांस्कृतिक धरोहर से जुड़ने की प्रेरणा भी देती है। डॉ. बानी का यह कार्य डीईआई की समग्र शिक्षा नीति और उसकी गहरी मानवीय और आध्यात्मिक प्रतिबद्धता के साथ पूर्ण रूप से मेल खाता है।

दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट के स्थापना दिवस' पर रही धूम, प्रदर्शनी में बताए स्वस्थ्य रहने के टिप्स

ENVIRONMENTAL Friendly Study

i SPECIAL

tara.chandra@inext.co.in

पर्यावरण हमारे जीवन के लिए महत्वपूर्ण है. बढ़ती आबादी की मांगों को पूरा करने के लिए जमीन, से उगने वाली सब्जियों में अधिक मात्रा में कीटनाशक का प्रयोग किया जा रहा है. जिससे लोगों में तरह-तरह की बीमारियां पनप रही है. दयालबाग के स्टूडेंट्स ने शुक्रवार को इनवायरलमेंट फ्रेंडली स्ट्डी का संदेश दिया. इसके साथ ही तैयार किए गए. आयुर्वेद के पॉउडर और प्लांट सेल किए, लेमनग्रास, मौंगरा, पत्थर चट्टा के फायदे भी बताए. जिससे वे हेल्दी और फिट बन सकें.

स्टूडेंट्स के भीतर स्किल डेवलप

दयालबाग इंस्टीटयूट संस्थान के संस्थापक निदेशक गुरु हुजूर डॉ. एमबी लाल साहब की जयंती को स्थापना दिवस के रूप में मनाया जाता है. राधास्वामी शिक्षण संस्थान की स्थापना के साथ 1917 में स्थापित, डीईआई की जड़ें लखनऊ विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. एमबी लाल साहब द्वारा तैयार की गई. संस्थान अपने छात्रों में विकास को बढ़ावा देने के लिए उनके भीतर स्किल को विकसित करना है. जिससे स्टूडेंट्स पढ़ाई के साथ स्वरोजगार भी सीख सकें.

स्टूडेंट्स करते हैं ऑर्गेनिक खेती

दयालबाग के कृषि-सह-परिशुद्धता खेती कराई जाती है. शिक्षा सलाहकार समिति सत्संगी साहब की सम्मानित उपस्थिति ने इस अवसर की शोभा बढ़ाई. यह सभा में उच्च शिक्षा कार्यक्रम का नेतृत्व करने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका के लिए डॉ. एमबी और कृतज्ञता व्यक्त की. स्टूडेंट्स को स्टडी के साथ-साथ ऑर्गेनिक खेती करना

❝ आज प्रदर्शनी में हमने ऐसे प्लांट को रखा है, जिसके सेवन से स्वस्थ्य रह सकते हैं. यहां आने वाले स्टूडेंट्स और उनके पेरेंट्स को प्लांट के फायदे के टिप्स शेयर किए गए हैं. इसके साथ ही प्लांट भी सेल किए गए हैं.

रिद्धी

के अध्यक्ष प्रो. पीएस विशेष रूप से डीईआई लाल के हार्दिक श्रद्धा सिखाया जाता है.

स्टूडेंट्स ने लगाई एनवायरलमेंट फ्रेंडली स्टॉल

स्टूडेंट्स ने परिसर में 51 स्टॉल लगाए गए थे, जिनमें कपड़ा, सिरेमिक और मिट्टी के बर्तन, जैविक खेती, कृषि प्रौद्योगिकी, ग्रीन हाउस प्रौद्योगिकी, पेटेंट, प्लेसमेंट, अनुसंधान, डेयरी प्रौद्योगिकी, 3-डी प्रिंटिंग, नैनो और क्वांटम विज्ञान, चेतना, ड्रोन, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस ऑनलाइन और दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम, चमड़ा प्रौद्योगिकी, अनुपम उपवन, उन्नत भारत अभियान, पूर्व छात्र नेटवर्क, कौशल विकास, खाद्य प्रसंस्करण, चिकित्सा शिविर, डीईआई शिक्षा नीति, डीईआई का इतिहास और केंद्रीय प्रशासन, प्रवेश और परीक्षा सहित कई अन्य क्षेत्रों से संबंधित मॉडल और गतिविधियों का प्रदर्शन किया गया.

PICS : DAINIK JAGRAN INEXT

स्टूडेंट्स ने तैयार किया ड्रोन

संस्थान के इंजीनियरिंग विभाग के स्टूडेंट्स ने अपने ड्रोन कौशल को प्रदर्शित किया. बीटेक प्रथम और द्वितीय वर्ष के स्टूडेंट्स ने एग्री ड्रोन, फायर डिटेक्टर ड्रोन, फ्लावर ड्रारिपग ड्रोन, एयर क्वालिटी चैक ड्रोन, मेडिकल सर्विस ड्रोन, लाइटवेट डिलिवरी ड्रोन का प्रदर्शन किया. यह सभी संस्थान के स्टूडेंट्स ने अपने स्तर से तैयार किए हैं, जो 100 मीटर की ऊंचाई तक उड़ सकते हैं. संस्थान से बी-वोक करने वाले प्रफुल्ल गौतम ने यहां अपने ड्रोन का स्टाल लगाया. वह बताते है कि संस्थान से 2021 में डिग्री लेने के बाद उन्होंने ड्रोन के पार्ट्स की खरीद-बिक्री शुरु की. इसके बाद चीन से ड्रोन मंगवाकर उन्हें यहां सप्लाई किया. इसके बाद खुद उन्हें लोगों की जरूरत के हिसाब से तैयार कर बेचना प्रारंभ किया. अब वह स्टूडेंट्स को सिखाने के लिए ट्यूटोरियल ड्रोन भी बेचते हैं, जो महज 2500 रुपए में उपलब्ध हैं. इसके साथ व्यक्तिगत प्रयोग के लिए 10 से लेकर 60 हजार तक के ड्रोन भी वह तैयार करते है.

आयुर्वेदा का बढ़ रहा क्रेज

दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट में शुक्रवार को स्थापना दिवस मनाया गया. जिसमें स्टूडेंट्स ने उत्साह, जोश के साथ भाग लिया. इस दौरान इंस्टीटयूट में एक प्रदर्शनी लगाई गई, वहां आने वाले स्टूडेंट्स और पेरेंट्स को स्वस्थ्य रहने के टिप्स शेयर किए. मुरिंगा पॉउडर, नेचुरल लेमन ग्रास, पत्थर चट्टा के अलावा एलोविरा प्लांट सेल किए, स्टूडेंट्स बाजार से बहुत ही कम कीमत पर इन प्लांटों को सेल किया. सभी प्लांट दस रुपए के सेल किए, उनके साथ दो अन्य प्लांट भी गिफ्ट किए. इसका मुख्य उद्देशय लोगों को आयुर्वेद की प्रति अवेयर करना था.

BREAKING NEWS
सिटी की ब्रेकिंग न्यूज से रहें रियल टाइम अपडेट

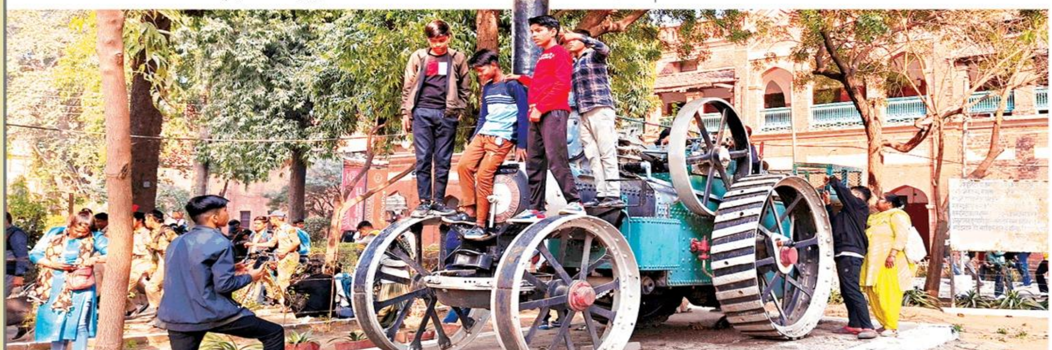

दयालबाग एजूकेशनल इंस्टीट्यूट के स्थापना दिवस के मौके पर शुक्रवार को डीईआई कैंपस में ओपन डे का आयोजन किया गया. इसमें रखीं विंटेज गाड़ियां आकर्षण का केंद्र रहीं. इसके अलावा कैंपस में मेड इन इंगलैंड का स्टीम इंजन ट्रैक्टर भी लोगों को लुभाता रहा. यहां विजिट करने आए लोग सेल्फी लेते दिखाई दिए.

❝

एयर क्वालिटी चेक ड्रोन, मेडिकल सर्विस ड्रोन, लाइटवेट डिलिवरी ड्रोन स्टूडेंट्स ने अपने स्तर से तैयार किए हैं, जो 100 मीटर की ऊंचाई तक उड़ सकते हैं. व्यक्तिगत प्रयोग के लिए 10 से लेकर 60 हजार तक के ड्रोन भी वह तैयार करते हैं.

दिव्या

ओपन डे पर स्टूडेंट्स ने प्रोजेक्ट तैयार किए है. सबसे ज्यादा अश्वगंधा और लैमन ग्रास की मांग रही. इसके साथ उनके द्वारा तैयार रेड चिली स्प्रे, लहसुन पेस्ट स्प्रे को कीटनाशक के रूप में छिड़काव के लिए पसंद किया गया.

रोहित

स्टूडेंटस ने लेमन पिक्कल भी तैयार किया है, जो बीस रुपए का है, मार्केट की रेट से बहुत कम है. इसी तरह अन्य ऑर्गेनिक सब्जियों को भी सेल किया गया है. ऑर्गेनिक सब्जियों का उपयोग हेल्थ के लिए अच्छा है.

तनिष्का

डीईआइ के स्थापना दिवस पर शोध और उपलब्धियों का प्रदर्शन

संस्थान के संस्थापक निदेशक गुरु हुजूर डा. एमबी लाल साहब की जयंती पर हुआ आयोजन, छाया रहा हर्ष और उल्लास

जासं, आगरा: दयालबाग शिक्षण संस्थान (डीईआइ) का संस्थापक दिवस समारोह (ओपन डे) उत्साह, जोश और उल्लास संग मनाया गया। संस्थान के संस्थापक निदेशक गुरु हुजूर डा. एमबी लाल साहब की जयंती पर हुए कार्यक्रम में विभागों ने वर्ष की उपलब्धियां प्रदर्शित की। वहीं विद्यार्थियों ने नवाचार, शोध और व्यक्तिगत प्रयासों का प्रदर्शन किया।

आयोजन की रौनक डीईआइ में सुबह से ही बिखरी थी। पूरा परिसर विभिन्न गतिविधियों, प्रदर्शनी और रंग-बिरंगी सजावट से जीवंत हो उठा। विद्यार्थियों ने 51 स्टाल लगाकर अपनी लगन और कड़ी मेहनत से तैयार अपने अभिनव प्रोजेक्ट और रचनात्मक कार्यों को ग्राफिकल चार्ट, सक्रिय माडल, डिस्प्ले बोर्ड और इंटरएक्टिव गतिविधियों के माध्यम से प्रस्तुत किया। विभिन्न प्रकार के कपड़े, सिरेमिक और मिट्टी के बर्तन, जैविक खेती, कृषि प्रौद्योगिकी, ग्रीन हाउस प्रौद्योगिकी, पेटेंट, प्लेसमेंट, अनुसंधान, डेयरी प्रौद्योगिकी, थ्री-डी प्रिंटिंग, नैनो और क्वांटम विज्ञान, चेतना, ड्रोन, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, आनलाइन और दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम, चमड़ा प्रौद्योगिकी, अनुपम उपवन, उन्नत भारत अभियान, पूर्व छात्र नेटवर्क, कौशल विकास, खाद्य प्रसंस्करण को सभी ने खूब सराहा। साथ ही डीईआई की शिक्षा नीति, इतिहास और केंद्रीय प्रशासन, प्रवेश, परीक्षा सहित कई अन्य क्षेत्रों से संबंधित माडल और गतिविधियों को प्रदर्शित किया गया। प्रदेश के करीब 50 स्कूलों के विद्यार्थियों ने परिसर में पहुंचकर संस्थान के कार्यों और उपलब्धियों को देखा। आयोजन में करीब 10 हजार से अधिक लोग शामिल हुए। पूरे परिसर में भक्ति संगीत पाठ सुबह से शाम तक गूंजते रहे।

सुबह हुई सलाहकार समिति की बैठक: इससे पूर्व सुबह दयालबाग के कृषि-सह-परिशुद्धता खेती प्रक्षेत्र पर शिक्षा सलाहकार समिति के अध्यक्ष प्रो. पीएस सत्संगी की उपस्थिति में सलाहकार समिति की बैठक हुई। इसमें उच्च शिक्षा कार्यक्रम का नेतृत्व कराने वाले डा. एमबी लाल साहब के प्रति श्रद्धा और कृतज्ञता व्यक्त की गई। समग्र शैक्षिक कार्यक्रमों के कार्यान्वयन व प्रगति पर मंथन किया। शिक्षा सलाहकार समिति के अध्यक्ष गुरु प्रो. पीएस सत्संगी के अमृतमय भाषण ने सर्वोच्च आध्यात्मिकता के भंडार धुन (आध्यात्मिक ध्वनि या जाप) का महत्व बताया, जिसे परम पुरुष पूरन धनी हुजूर स्वामी महाराज ने दयालबाग में स्थापित 'रा-धा-स्व-आ-मी' मत में वैज्ञानिक रूप से समझाया।

पूर्व छात्र बना ड्रोन मास्टर: संस्थान से बी-वोक करने वाले प्रफुल्ल गौतम ने यहां अपने ड्रोन का स्टाल लगाया। वह बताते हैं कि संस्थान से 2021 में डिग्री लेने के बाद उन्होंने ड्रोन के पार्ट्स की खरीद-बिक्री शुरु की। इसके बाद चीन से ड्रोन मंगवाकर उन्हें यहां सप्लाई किया। इसके बाद खुद उन्हें लोगों की जरूरत के हिसाब से तैयार कर बेचना प्रारंभ किया। अब वह विद्यार्थियों को सिखाने के लिए ट्यूटोरियल ड्रोन भी बेचते हैं, जो महज 2500 रुपये में उपलब्ध हैं। इसके साथ व्यक्तिगत प्रयोग के लिए 10 से लेकर 60 हजार तक के ड्रोन भी वह तैयार करते हैं। इसके साथ उन्होंने कृषि कार्यों में प्रयोग के लिए ड्रोन तैयार किए हैं, जिन्हें कश्मीर से कन्याकुमारी तक सप्लाई कर रहे हैं। महाकुंभ में भी उनके बड़े ड्रोन को आपात स्थिति में लाइफ जैकेट उपलब्ध कराने के लिए भेजा है।

दयालबाग शिक्षण संस्थान में लगाई गई प्रदर्शनी में ड्रोन प्रदर्शित करते विद्यार्थी। दूसरे चित्र में बी-वोक के विद्यार्थियों द्वारा लगाई गई हर्बल मेडिसिन सामग्री की स्टाल ● जागरण

ड्रोन तकनीक का दिखाया कौशल

संस्थान के इंजीनियरिंग विभाग के विद्यार्थियों ने अपने ड्रोन कौशल को प्रदर्शित किया। बीटेक प्रथम और द्वितीय वर्ष के विद्यार्थियों ने एग्री ड्रोन, फायर डिटेक्टर ड्रोन, फ्लावर ड्रापिंग ड्रोन, एयर क्वालिटी चैक ड्रोन, मेडिकल सर्विस ड्रोन, लाइटवेट डिलिवरी ड्रोन का प्रदर्शन किया। यह सभी संस्थान के विद्यार्थियों ने अपने स्तर स तैयार किए हैं, जो 100 मीटर की ऊंचाई तक उड़ सकते हैं।

सहायक आचार्य डा. बानी की पुस्तक का विमोचन

कार्यक्रम में डीईआइ के अंग्रेजी विभाग की सहायक आचार्य डा. बानी दयाल धीर की पुस्तक ट्रेवल डायरीज विद माय बीलव्ड नाना-नानी का विमोचन किया गया, जिसमें उन्होंने अपनी नाना-नानी के साथ की गई यात्रा में मिली अनमोल जीवन की सीख और आशीर्वाद साझा किए हैं। डा. बानी ने बताया कि पुस्तक एक यात्रा वृत्तांत है, जो जीवन को समझने, परिवार के बंधनों की कद्र करने और अपने आध्यात्मिक और सांस्कृतिक धरोहर से जुड़ने की प्रेरणा देती है और राधास्वामी मत के दृष्टिकोण से आध्यात्मिक स्थलों का महत्व बताने के साथ परिवार, विशेष रूप से नाना-नानी के साथ बिताए समय की अमूल्य महत्ता दर्शाती है। पुस्तक भारतीय संस्कृति, आध्यात्मिकता और जीवन के उच्चतम आदर्शों को प्रस्तुत करती है, जो विद्यार्थियों के लिए प्रेरणा स्रोत बनेगी।

डीईआइ में अपनी पुस्तक के बारे में बताती डा. बानी ● जागरण

हर्बल उत्पादों की रही मांग

संस्थान के बी-वोक विभाग द्वारा हर्बल उत्पादों की स्टाल लगाई गई। इसमें प्रथम और द्वितीय वर्ष के विद्यार्थियों सौरभ जादौन, विपिन, अमन शर्मा, प्रवीश कुमार और राहुल ने बताया कि स्टाल पर उन्होंने जैविक रूप से उगाई गई मेडिसनल हर्बल की बिक्री की। सबसे ज्यादा अश्वगंधा और लैमन ग्रास की मांग रही। इसके साथ उनके द्वारा तैयार रेड चिली स्प्रे, लहसुन पेस्ट स्प्रे को कीटनाशक के रूप में छिड़काव के लिए पसंद किया गया।

डीईआइ के स्थापना दिवस पर प्रदर्शित किया गया रोबोट ● जागरण

डीईआई | दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट का फाउंडर डे ओपन डे के रूप में मनाया गया, सभी विभाग व संकायों ने किया अपने कार्यों का प्रदर्शन, 12 हजार से अधिक छात्र, अभिभावक और शोधार्थियों ने अविष्कार की दुनिया देखी

ओपन डेः रोबोट ने दिया ज्ञान, दिखाया समस्याओं का समाधान

आगरा, वरिष्ठ संवाददाता। दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट के ओपन डे में संस्थान के द्वार सभी के लिए खुले। डीईआई के फाउंडेशन डे पर द्वार खुलते ही अविष्कार, समस्याओं के समाधान और बेहतर खानपान, संस्कारों की दुनिया दिखी। ओपन डे में जहां रोबोट ज्ञान देता हुआ नजर आया। वहीं, निर्माण होने में कचरा होती लकड़ी का सद्उपयोग भी होते दिखा। ओपन डे में 12 हजार से अधिक छात्र, अभिभावक और शोधार्थियों ने अविष्कार की दुनिया देखी। डीईआई हर साल 31 जनवरी को अपना फाउंडेशन डे मनाता है। फाउंडेशन डे को ओपन डे के रूप में मनाया जाता है। ऐसे में डीईआई में सभी को प्रवेश दिया जाता है। शुक्रवार को डीईआई में हो रहे कार्यों, शिक्षण और शोध को देखने के लिए आगरा मंडल के 50 से अधिक विद्यालयों के छात्र पहुंचे। ओपन डे में विज्ञान संकाय पर पहुंचते ही सभी को ज्ञान रोबोट ने आकर्षित किया। सवालों के जवाब देने के साथ डांस और पीटी करने में माहिर रोबोट को डिपार्टमेंट ऑफ कंप्यूटर साइंस की प्रो. सी. वसंता लक्ष्मी के निर्देशन में तैयार किया गया है। डिपार्टमेंट ऑफ मेकेनिकल इंजीनियरिंग में आयुष सत्संगी के निर्देश में लकड़ी के खराब हिस्सों को आर्कषक घरेलू सामान बनाने का रास्ता दिखाया गया। ओपन डे में संस्थान के पूर्व छात्रों ने ड्रोन स्टार्टअप को प्रस्तुत किया। इसके साथ ही संस्थान में भी ड्रोन पर हो रहे कार्यों को दिखाया। संस्थान की ओर से तैयार किए जा रहे आर्गेनिक प्रोडक्ट और हैंडीक्रफ्ट को बिक्री के लिए रखा गया। लोगों की रुचि बीमारियों से बचाव और सेहतमंद बनाने वाले उत्पादों में रही।

दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट के ओपन डे में शुक्रवार को विद्यार्थियों ने मॉडलों की प्रदर्शनी लगायी।

विद्यार्थी अपने मॉडल रोबोट के साथ।

गर्मी में कम रहेगा तापमान, ठंड में नहीं लगेगी सर्दी

डीईआई के इंजीनियरिंग संकाय के छात्र अनूप शर्मा की ओर से ईंट और लिंटर स्लैब का मॉडल प्रस्तु किया गया। बीटेक सिविल के छात्र अनूप शर्मा ने बताया कि इस स्लैब और ईंटों को बनाने के दौरान खास तरह का केमिकल एलुमिनियम पाइव में डालकर प्रयोग किया गया है। इसके कारण से यह तापमान को मैनेज कर पाता है। इससे हुए निर्माण में 5 से लेकर 10 डिग्री तक के तापमान का संतुलन रहता है। यानि कि गर्मी के दिनों में इस सामग्री से बने घर अन्य घरों की तुलना में ठंडे रहेंगे। वहीं सर्दी में गर्म होंगे।

दूर हो जाएगी गली में जलभराव की समस्या

सिविल इंजीनियरिंग के ही छात्र गौरांग भाष्कर, विशाल कुमार, मूसा खान, अनुराग और अगम ने ऐसी ईट को बनाया है, जो जलभराव की समस्या का समाधान कर देगी। गौरांग के अनुसार उनके द्वारा सिलिका फोम बेस्ड कंक्रीट ब्रिक को तैयार किया गया है। इस तकनीक के बनी ईंट पानी को रोकती नहीं है, बल्कि वह पानी के भरने पर उसे जमीन में भेज देती है। इस तकनीक की ईंट से बने खड़ंजे, सड़क पर जलभराव नहीं होगा।

पैरों की समस्याओं का समाधान करेंगे जूते

डिपार्टमेंट ऑफ फुटवियर टेक्नोलॉजी के छात्र विशाल शर्मा और यशदीप यादव की ओर से फ्लैट फुट, हैमर टो और बनियन टो की समस्याओं से जूझ रहे लोगों की मुश्किल कम करने का रास्ता दिखाया। छात्रों ने बताया कि वह ऐसी समस्या वाले लोगों के लिए कस्टमाइज जूते तैयार कर सकते हैं। सबसे खास बात यह है कि इस प्रोजेक्ट से पांच सौ रुपये में कस्टमाइज ईवा शूज तैयार हो जाएंगे।

बारिश होते ही खुलेगा छाता, गैस लीक पर एक्शन

इंजीनियरिंग के छात्र आदित्य खन्ना की ओर से खतरनाक गैस के लीकेज पर होने वाले हादसों से बचाव का रास्ता दिखाया गया। इसके माध्यम से कार्बन मोनो ऑक्साइड, मीथेन सहित कई गैसों के लीक होते ही उसकी जानकारी सिस्टम को मिल जाएगी और बचाव का सिस्टम एक्टिव हो जाएगा। इंजीनियरिंग के अभिषेक, आदित्य बी., आदित्य के. अनिमेश, अनहद, अनिरुद्ध, अंजनय, अनुराग की ओर से स्मार्ट अम्ब्रैला को प्रस्तुत किया। इसमें लगा सेंसर बारिश होते ही छाते को खोल देगा।

वसंत पंचमी की रौनक, आराध्य बिखेरेंगे वासंती आभा

शहरभर में होने लगी तैयारी, दयालबाग में इस वर्ष तीन फरवरी के स्थान पर नौ मार्च को होगा उत्सव

जासं, आगरा: वसंत पंचमी को लेकर बाजारों में वसंती आभा छाने लगी है। इस अवसर पर आराध्य वसंती आभा में रंगें नजर आएंगे क्योंकि उनके लिए बाजार में विशेष पोशाक और श्रृंगार उपलब्ध है। हालांकि वसंतोत्सव पर दयालबाग में होने वाले आयोजन के लिए थोड़ी प्रतीक्षा करनी होगी क्योंकि इस वर्ष अनुयायी नौ मार्च को संस्था परम पूज्य हुजुर प्रो. प्रेम सरन सत्संगी के जन्मदिन पर आयोजन में जुटेंगे।

वसंत पंचमी का त्योहार तीन फरवरी को मनाया जाएगा। इस दिन मां सरस्वती की आराधना कर हवन-यज्ञ किए जाएंगे। सभी जहां वसंती आभा में दिखेंगे, तो श्रद्धालु अपने आराध्यों को कैसे भूल सकते हैं। उनके लिए भी श्रद्धालु वसंती रंग की पोशाक और श्रृंगार खरीदने बाजार पहुंच रहे हैं। पोशाक विक्रेता मयंक मिश्रा ने बताया कि इस वर्ष वसंती रंग की पोशाक विभिन्न वैरायटी में उपलब्ध हैं। उनके साथ मैचिंग मुकुट और पगड़ी, कड़े, माला, पाजेब, आदि भी उपलब्ध है। एक सेट की कीमत 40 रुपये से 450 रुपये तक अलग-अलग आकार और प्रकार में उपलब्ध है।

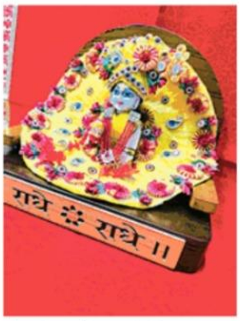

लड्डू गोपाल को पहनाने के लिए वसंती पोशाक और श्रृंगार की खूब मांग है ● जागरण

दयालबाग में एक दुकान पर टंगी पीले रंग की आर्टिफिशियल माला ● जागरण

नौ मार्च को मनाएंगे वसंतोत्सव

दयालबाग में इस वर्ष तीन फरवरी को वसंतोत्सव औपचारिक रूप से ही मनाया जाएगा। घरों व कालोनियों में सजावट करने के साथ खेलकूद के कार्यक्रम होंगे, लेकिन गुरु का आशीर्वाद लेने के लिए देश-विदेश से अनुयायी नहीं जुटेंगे। बाहर से अनुयाइयों को नौ मार्च को आमंत्रित किया गया है। क्योंकि नौ मार्च को संस्था परम पूज्य हुजुर प्रो. प्रेम सरन सत्संगी के जन्मदिन पर भव्य आयोजन होगा। दयालबाग की कोर कमेटी ने निर्णय लिया है कि इस वर्ष वसंतोत्सव पर स्थानीय स्तर पर ही खेलकूद व अन्य आयोजन होंगे। वहीं बाहरी अनुयाइयों को नौ मार्च को होने वाले भव्य आयोजन के लिए आमंत्रित किया गया है।

डीईआई के स्थापना दिवस पर दिखाई प्रतिभा

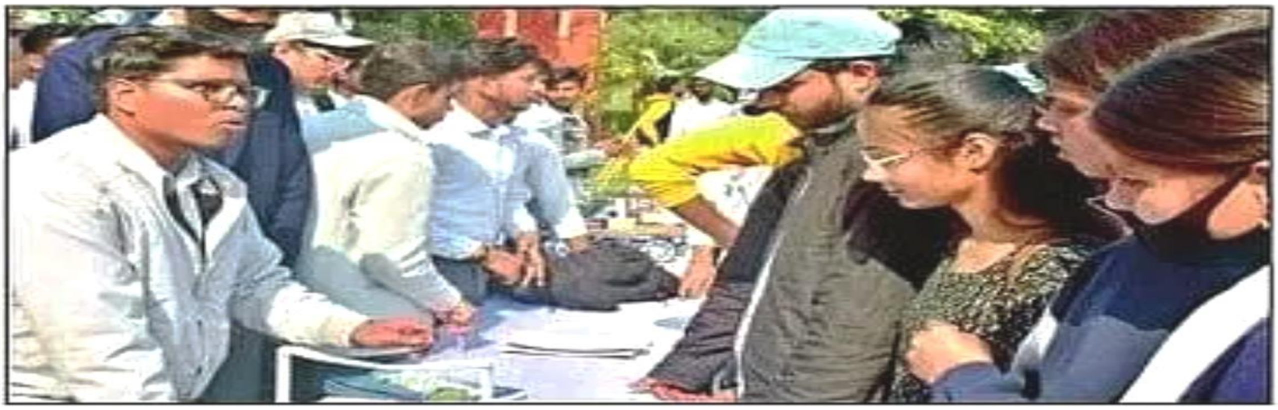

प्रदर्शनी में मॉडल के बारे में बताता छात्र। अमर उजाला

आगरा। दयालबाग इंजीनियरिंग इंस्टीट्यूट (डीईआई) में शुक्रवार को स्थापना दिवस मनाया। विज्ञान प्रदर्शन का भी आयोजन किया गया। इसमें छात्रों ने अपने मॉडल प्रदर्शित किए। मुख्य आकर्षण का केंद्र ई-ग्रीन बाइक रही। लीथियम बैटरी से चलने वाली ये बाइक सौर ऊर्जा से भी चार्ज हो सकेगी। वहीं, एग्रीकल्चर ड्रोन, हाईड्रोजन गैस से संचालित होने वाली प्रेस भी चर्चा में रही। डीईआई की अंग्रेजी विभाग की सहायक प्रोफेसर डॉ. बानी दयाल धीर की किताब ''ट्रैवल डायरीज विद माय बीलव्ड नाना-नानी'' का विमोचन किया। ब्यूरो

राधास्वामी हाई स्कूल में लगाई गई विज्ञान प्रदर्शनी

जागरण, टिमरनी। दयालबाग शिक्षण संस्थान के संस्थापक निदेशक एवं उसकी शिक्षा नीति के निर्माता डॉ मकुंद बिहारी लाल साहब का 118वां जन्मदिन राधास्वामी हाई स्कूल एवं डीईआई आईसीटी सेंटर टिमरनी द्वारा ओपन डे के रूप में हर्ष और उल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि किरण राहंगडाले मुख्य नगर पालिका अधिकारी टिमरनी ने दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन किया। मेकैनिकल एवं ऑटोमोबाइल डिप्लोमा, बीएड, बीवॉक डेरी टेक्नोलॉजी एंड फूड प्रोसेसिंग, सर्टिफिकेट कोर्सेज, ड्रेस डिजाइनिंग, मोटर व्हीकल, वायरमैन एवं ऑफिस मैनेजमेंट पाठ्यक्रमों के विद्यार्थियों ने व्यवहारिक मॉडलों का प्रदर्शन किया। बी वॉक डेरी टेक्नोलॉजी फूड प्रोसेसिंग और ड्रेस डिजाइनिंग के विद्यार्थियों द्वारा उत्पाद की बिक्री भी की गई। इंटरमीडिएट के विद्यार्थियों द्वारा फूड स्टॉल भी लगाया गया। हाई स्कूल के विद्यार्थियों द्वारा बनाए गए विज्ञान, सामाजिक विज्ञान एवं भाषाओं के सिद्धांतों के कार्यशील प्रारूप एवं चार्ट्स आगंतुकों के लिए आकर्षण बने। सर्वश्रेष्ठ प्रविष्टियों को पुरस्कृत भी किया गया। प्राचार्य प्रो एसपी कौशिक के निर्देशन में विज्ञान प्रदर्शनी का समन्वयन पियूष गुप्ता, पूजा अग्रवाल, मनीषा अग्रवाल, मुकेश कुमार, भावना भिलाला एवं गुरुमेहर गोलन द्वारा किया गया। कार्यक्रम में विद्यालय संरक्षक डॉ धर्मपाल सत्संगी भी उपस्थित रहे।

दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (DEI) ने 'स्थापना दिवस' धूमधाम से मनाया

टी.एन.एफ. टुडे ब्यूरो

दयालबाग। दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (DEI), एक प्रतिष्ठित संस्थान जो समग्र और संपूर्ण शिक्षा के लिए अपनी प्रतिबद्धता के लिए जाना जाता है, ने आज 31 जनवरी को अपने स्थापना दिवस को अद्वितीय उत्साह, जोश और उल्लास के साथ मनाया। यह दिन विशेष महत्व रखता है क्योंकि यह छ्श्वद्ध के संस्थापक निदेशक परम गुरु हुजूर डॉ. एम बी लाल साहब की शुभ जयंती का प्रतीक है। राधास्वामी शिक्षण संस्थान की स्थापना के साथ 1917 में स्थापित, छ्श्वद्ध की जड़ें लखनऊ विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. एम बी लाल साहब द्वारा तैयार की गई छ्श्वद्ध की गहन दृष्टि और अभिनव शिक्षा नीति 1975 में हैं। संस्थान अपने छात्रों में सर्वांगीण विकास को बढ़ावा देने की प्रतिबद्धता के साथ वर्षों से उत्तरोत्तर विकसित हुआ है।

संस्थापक दिवस समारोह, जिसे ओपन डे के रूप में भी जाना जाता है, में छ्श्वद्ध के छात्रों, शिक्षकों और कर्मचारियों द्वारा की गई उपलब्धियों और पहलों का शानदार प्रदर्शन हुआ। पूरा परिसर गतिविधियों, प्रदर्शनों और रंग-बिरंगी सजावट से जीवंत हो उठा, जिससे अपार खुशी और उत्सव का माहौल बन गया। इस वर्ष के उत्सव में डीईआई के छात्रों की लगन और कड़ी मेहनत को प्रदर्शित किया गया, जिन्होंने अपने अभिनव प्रोजेक्ट और रचनात्मक कार्यों को विभिन्न मीडिया जैसे कि ग्राफिकल चार्ट, वर्किंग मॉडल, डिस्प्ले बोर्ड और इंटरएक्टिव गतिविधियों के माध्यम से प्रस्तुत किया। डीईआई में संकाय और केंद्रीय स्थानों दोनों पर व्यवस्था की रूपरेखा सावधानीपूर्वक बनाई गई थी, जिससे आगरा के आम लोगों और आमंत्रित आगंतुकों को अध्ययन और कार्य के विभिन्न क्षेत्रों में नई पहल और उच्च प्रदर्शन का पता लगाने का मौका मिला।

कुल 51 स्टॉल लगाए गए थे, जिनमें कपड़ा, सिरेमिक और मिट्टी के बर्तन, जैविक खेती, कृषि प्रौद्योगिकी, ग्रीन हाउस प्रौद्योगिकी, पेटेंट, प्लेसमेंट, अनुसंधान, डेयरी प्रौद्योगिकी, 3-डी

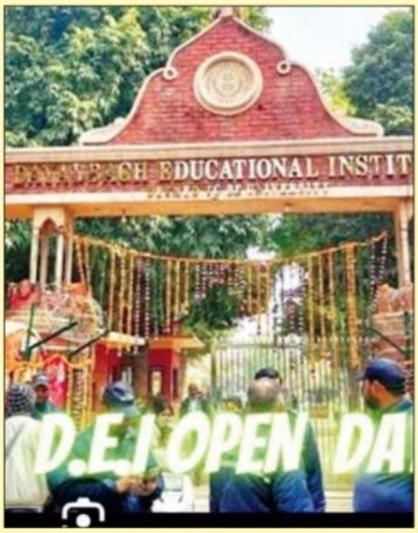

प्रिंटिंग, नैनो और क्वांटम विज्ञान, चेतना, ड्रोन, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस ऑनलाइन और दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम, चमड़ा प्रौद्योगिकी, अनुपम उपवन, उन्नत भारत अभियान, पूर्व छात्र नेटवर्क, कौशल विकास, खाद्य प्रसंस्करण, चिकित्सा शिविर, डीईआई शिक्षा नीति, डीईआई का इतिहास और केंद्रीय प्रशासन, प्रवेश और परीक्षा सहित कई अन्य क्षेत्रों से संबंधित मॉडल और गतिविधियों का प्रदर्शन किया गया। उत्तर प्रदेश के लगभग 50 स्कूलों के युवा स्कूली बच्चों ने भी परिसर का दौरा किया और डीईआई के कार्यों और उपलब्धियों का शानदार प्रदर्शन देखा, जिससे उन्हें अपने भविष्य के शैक्षणिक कैरियर और पेशेवर विकल्पों की योजना बनाने में भी मदद मिली। कुल मिलाकर, लगभग 10,000 लोग इस अवसर पर एकत्रित हुए और डीईआई परिसर का दौरा किया। डीईआई के छात्रों और कर्मचारियों द्वारा सुबह से देर दोपहर तक भक्ति संगीत का पाठ पूरे परिसर में गूंजता रहा, जिससे गहन दिव्यता और भक्ति का माहौल बन गया।

इस महत्वपूर्ण अवसर पर दयालबाग के कृषि-सह-परिशुद्धता खेती प्रक्षेत्र पर सुबह बुलाई गई सलाहकार समिति की बैठक के दौरान शिक्षा सलाहकार समिति के अध्यक्ष परम श्रद्धेय प्रोफेसर पी.एस. सत्संगी साहब की सम्मानित उपस्थिति ने इस अवसर की शोभा बढ़ाई। यह सभा विशेष रूप से डीईआई में उच्च शिक्षा कार्यक्रम का नेतृत्व करने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका के लिए श्रद्धेय डॉ. एमबी लाल साहब के चरण कमलों में हार्दिक श्रद्धा और कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए बुलाई गई थी। यह बैठक समग्र शैक्षिक कार्यक्रमों के कार्यान्वयन के माध्यम से प्राप्त असाधारण प्रगति को उजागर करने के लिए एक मंच के रूप में कार्य करती है। दयालबाग शैक्षणिक संस्थानों की शिक्षा सलाहकार समिति के अध्यक्ष परम पूज्य प्रोफेसर पी.एस. सत्संगी साहब के दिव्य मार्गदर्शन में इन कार्यक्रमों ने और अधिक प्रगति की और नवाचार के साथ उत्कृष्टता प्राप्त की है। इस विशेष अवसर पर, प्रो. सत्संगी ने अपने अमृतमय भाषण में, सर्वोच्च आध्यात्मिकता के भंडार के उच्चतम निवास से लगातार निकलने वाली %धुन% (आध्यात्मिक ध्वनि या जाप) के सर्वोत्कृष्ट महत्व पर प्रकाश डाला, जिसे परम पुरुष पूरन धनी हुजूर स्वामी जी महाराज द्वारा दयालबाग, आगरा में स्थापित 'रा-धा-स्व-आ-मी' मत में वैज्ञानिक रूप से समझाया गया है। परम पूज्य प्रोफेसर पी.एस. सत्संगी साहब द्वारा दिए गए अमूल्य समय और आशीर्वाद ने संस्थापक दिवस समारोह में एक गहन आध्यात्मिक आयाम जोड़ा। संस्थापक दिवस समारोह ने अपनी शानदार विरासत का सम्मान करने और अपने दूरदर्शी नेताओं के उदार मार्गदर्शन में समग्र शिक्षा के सिद्धांतों को बनाए रखने के लिए छ्श्वद्ध की गहरी प्रतिबद्धता का उदाहरण दिया।

छ्श्वद्ध में संस्थापक दिवस केवल एक उत्सव नहीं है; यह उत्कृष्टता, नवाचार और अपने छात्रों के सर्वांगीण विकास के लिए संस्थान की प्रतिबद्धता का प्रमाण है। यह कार्यक्रम छात्रों को अपनी प्रतिभा दिखाने, एक-दूसरे से सीखने और संस्थान के विकास और प्रगति में योगदान देने के लिए एक सहकारी और सहयोगी मंच प्रदान करता है।

संस्थापक दिवस पर इस बार सभी के लिए खुलेगा डीईआई

आगरा। दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीईआई) (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी) का संस्थापक दिवस 31 जनवरी को ओपन डे के रूप में मनाया जाएगा। जिसमें विश्वविद्यालय में संचालित पाठ्यक्रमों की जानकारी एक ही स्थान पर प्राप्त कोई भी व्यक्ति प्राप्त कर सकेगा।इसके लिए 51 स्टॉल ओपन डे में लगेंगी।

ओपन डे में इस बार आगरा मंडल के विभिन्न विद्यालयों के छात्र भी शामिल होंगे। कुलसचिव डॉ. आनंद मोहन ने बताया कि प्रदर्शनी सभी के लिए खुली है। ओपन डे की समन्वयक प्रो. संगीता सैनी ने बताया कि इस बार डीईआई की सात फैकल्टी सहित संस्था से जुड़े 12 संस्थान अपने कार्य को प्रदर्शित करेंगे। सह समन्वयक डॉ. एम. राधा कृष्ण ने बताया कि छात्र अपने वर्किंग, नॉन वर्किंग मॉडल प्रस्तुत करेंगे। प्रदर्शनी विज्ञान संकाय (साइंस फैकेल्टी) के मैदान पर लगाई जाएगी। कार्यक्रम में मंडल के करीब 25 स्कूलों को भी आमंत्रित किया गया है। प्रत्येक स्कूल के प्रतिनिधिमंडल में 25 से 120 तक बच्चे हो सकते हैं।

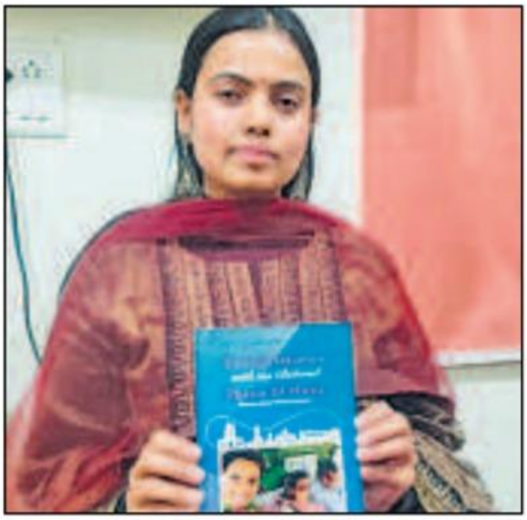

डा. बानी दयाल धीर।

नई पीढ़ी को समझना होगा ग्रांड पैरेंट्स का महत्व

आगरा। दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट की अंग्रेजी विभाग की सहायक प्रोफेसर डॉ. बानी दयाल धीर द्वारा लिखित पुस्तक पर चर्चा हुई। डॉ. बानी ने ट्रैवल डायरी विद माय बिलव्ड नाना-नानी लिखी है। पुस्तक में अपनी नाना-नानी के साथ की गई यात्रा के दौरान मिली अनमोल जीवन की सीखों और आशीर्वादों को साझा किया है।

यह पुस्तक राधास्वामी मत के दृष्टिकोण से आध्यात्मिक स्थलों के महत्व को उजागर करती है और परिवार, विशेष रूप से नाना-नानी के साथ बिताए गए समय की अमूल्य महत्ता को दर्शाती है। पुस्तक में भारतीय संस्कृति, आध्यात्मिकता और जीवन के उच्चतम आदर्शों को प्रस्तुत किया गया है।

हिन्दुस्तान जॉब्स ak आगरा शनिवार 1 फरवरी 2025 07

संस्थापक दिवस पर इस बार सभी के लिए खुलेगा डीईआई

आगरा। दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीईआई) (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी) का संस्थापक दिवस 31 जनवरी को ओपन डे के रूप में मनाया जाएगा। जिसमें विश्वविद्यालय में संचालित पाठ्यक्रमों की जानकारी एक ही स्थान पर प्राप्त कोई भी व्यक्ति प्राप्त कर सकेगा। इसके लिए 51 स्टॉल ओपन डे में लगेंगी।

ओपन डे में इस बार आगरा मंडल के विभिन्न विद्यालयों के छात्र भी शामिल होंगे। कुलसचिव डॉ. आनंद मोहन ने बताया कि प्रदर्शनी सभी के लिए खुली है। ओपन डे की समन्वयक प्रो. संगीता सैनी ने बताया कि इस बार डीईआई की सात फैकल्टी सहित संस्था से जुड़े 12 संस्थान अपने कार्य को प्रदर्शित करेंगे। सह समन्वयक डॉ. एम. राधा कृष्ण ने बताया कि छात्र अपने वर्किंग, नॉन वर्किंग मॉडल प्रस्तुत करेंगे। प्रदर्शनी विज्ञान संकाय (साइंस फैकेल्टी) के मैदान पर लगाई जाएगी। कार्यक्रम में मंडल के करीब 25 स्कूलों को भी आमंत्रित किया गया है। प्रत्येक स्कूल के प्रतिनिधिमंडल में 25 से 120 तक बच्चे हो सकते हैं। संवाद

आगरा Campus ak my city बृहस्पतिवार 30.01.2025 अमर उजाला 05

डीईआइ का संस्थापक दिवस समारोह आज, लगेगी प्रदर्शनी

- संस्थापक निदेशक गुरु डा. मकुंद बिहारी लाल साहब के जन्मदिन पर होगा आयोजन
- विभिन्न संकायों में सुबह से दोपहर तक होंगे कार्यक्रम तैयारियां पूरी

जासं, आगरा: दयालबाग शिक्षण संस्थान (डीईआइ) डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी को किसी परिचय की आवश्यकता नहीं। वर्ष 1917 में स्थापित संस्था देश-विदेश में अपने उच्च स्तरीय शिक्षण व शोध के लिए प्रसिद्ध है। इसके संस्थापक निदेशक गुरु हुजूर डा. एमबी लाल साहब के जन्मदिन (31 जनवरी)को डीईआइ में संस्थापक दिवस समारोह के रूप में मनाया जाएगा, जिसकी तैयारियां पूरी हो चुकी हैं।

डीईआइ की कुलसचिव प्रो. आनंद मोहन ने बताया कि कार्यक्रमों की शुरुआत सुबह छह बजे से होगी, जो दोपहर तीन बजे तक चलेंगे। पुराने जिम्नेजियम में भक्ति संगीत होगा। इसके बाद केंद्रीय प्रशासनिक कार्यालय, अर्किटेक्चर विभाग, कला संकाय, वाणिज्य संकाय, शिक्षा संकाय, इंजीनियरिंग संकाय, विज्ञान संकाय, इंटीग्रेटेड मेडिसिन संकाय, तकनीकी कालेज आदि स्थानों पर प्रदर्शनी का आयोजन किया जाएगा।

समन्वयक संगीत सैनी व प्रो राधाकृष्ण ने बताया कि केंद्रीय प्रदर्शन मैदान पर सभी फैकल्टी के काउंटर लगाए जाएंगे, जिनमें उनकी उपलब्धियों की जानकारी दी जाएगी।

दयालबाग में निर्मित होने वाले विभिन्न उत्पादों की बिक्री के साथ खानपान का स्टाल भी होंगे। कार्यक्रम में प्रदेश के करीब 25 स्कूलों को भी आमंत्रित किया गया है, प्रत्येक स्कूल के प्रतिनिधिमंडल में 25 से 120 तक विद्यार्थी होंगे। उन्हें डीईआइ की उपलब्धियों, प्रयोगशालाओं आदि की जानकारी दी जाएगी।

दयालबाग शिक्षण संस्थान में शुक्रवार को होने वाले संस्थापक दिवस समारोह की तैयारियों को अंतिम रूप दिया गया • सौ. संस्था

राष्ट्रीय शिक्षा नीति का किया क्रियान्वयन

डा. कविता रायजादा ने बताया कि डीईआइ की शिक्षा नीति की कल्पना और क्रियान्वयन 1975 में डीईआइ के सर्वोच्च वास्तुकार और संस्थापक निदेशक डा. मकुंद बिहारी लाल साहब ने की थी, जो राधा स्वामी मत के सातवें आध्यात्मिक आचार्य भी थे। उस आधार पर ही संस्थान 1986 और 2020 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति का अग्रदूत बना। इस दूरदर्शी दृष्टिकोण ने डीईआइ को कई वर्ष पहले एक प्रवर्तक के रूप में स्थापित किया। डीईआइ का शैक्षिक ढांचा अपनी विशिष्ट विशेषताओं द्वारा चिह्नित है, जो एक पूर्व व्यक्ति यानि सुपर ह्यूमन के समग्र विकास पर जोर देता है।

संस्थान की एकता, सहयोग और सफलता का उत्सव

संस्थान के कुलसचिव प्रो. आनंद मोहन ने बताया कि संस्थान में मनाया जा रहा यह संस्थापक दिवस सिर्फ एक अनुष्ठान नहीं, यह परम गरु हुजूर डा. एमबी लाल साहब के दूरदर्शी पथ प्रदर्शक और समग्र शिक्षा के प्रति डीईआइ की स्थाई प्रतिबद्धता की मान्यता के लिए एक श्रद्धांजलि है। इस दिन विद्यार्थी अपनी परियोजनाओं, सांस्कृतिक कार्यक्रमों, उद्यमशीलता और अभिनव परिणामों को प्रदर्शित करते हैं। यह उत्सव संस्थान की एकता, सहयोग और सफलता की भावना का प्रतीक है। जैसे-जैसे डीईआइ मूल्य आधारित शिक्षा, अनुसंधान और रचनात्मक गतिविधियों के माध्यम से अपने विद्यार्थियों की क्षमता को उजागर करना जारी रखता है।

8 दैनिक जागरण आगरा, 31 जनवरी, 2025 आगरा जागरण ak www.jagran.com

डीईआई में 31 जनवरी को संस्थापक दिवस समारोह

पूज्य डॉ. एम.बी.लाल साहब के विजन, मूल्यों और विरासत को श्रद्धांजलि

एडवोकेट सुरेखा यादव

आगरा। दयालबाग के शांत वातावरण में स्थित, दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीईआई) के लिए हर साल संस्थापक दिवस 31 जनवरी का विशेष महत्व है। 31 जनवरी का पावन दिवस, दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी) के संस्थापक निदेशक, परम गुरु हुजूर डॉ. एम. बी. लाल साहब का शुभ जन्मदिन है, यह दिन उनके पावन चरणकमलों में श्रद्धांजलि अर्पित करने एवं उत्सव मनाने का एक विशेष दिन है। डीईआई की शिक्षा नीति (1975), जिसकी कल्पना और क्रियान्वयन डीईआई (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी) के सर्वोच्च वास्तुकार और संस्थापक निदेशक पूज्य डॉ. मकुंद बिहारी लाल साहब, दयालबाग में रा-धा-स्व-आ-मी मत के सातवें आध्यात्मिक आचार्य, ने की थी, 1986 और 2020 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति का अग्रदूत है। इस दूरदर्शी दृष्टिकोण ने डीईआई को राष्ट्रीय एजेंडे से कई साल पहले शैक्षिक सुधारों की कल्पना करते हुए एक प्रवर्तक के रूप में स्थापित किया। डीईआई का शैक्षिक ढांचा अपनी विशिष्ट विशेषताओं द्वारा चिह्नित है, जो एक पूर्ण व्यक्ति या सुपरह्यूमन के समग्र विकास पर जोर देता है। सुपरमैन बनाने की प्रक्रिया को सुपरह्यूमन इवोल्यूशनरी स्कीम के माध्यम से नए सिरे से बल मिला है। दुनिया भर में फैले ये सुपरह्यूमन, अपने जीवन की प्रारंभिक अवस्था से ही सत्संग संस्कृति को आत्मसात कर रहे हैं, और ये सुपरह्यूमन, भविष्य में विश्व स्तर पर, दयालबाग जीवन शैली के राजदूत के रूप में, मानवता को सही मायने में सतत विकास का सही रास्ता दिखायेंगे। डीईआई की शिक्षा नीति के अंतःविषय-विकल्प, कार्य-आधारित प्रशिक्षण और मुख्य पाठ्यक्रम यह सुनिश्चित करते हैं कि छात्रों को न केवल शैक्षणिक उत्कृष्टता प्राप्त हो, बल्कि वे व्यावहारिक कौशल, सांस्कृतिक शिक्षा और सामाजिक जिम्मेदारी की भावना से भी ओतप्रोत हों। आधुनिक स्वास्थ्य सेवा आवास और आत्मरक्षा का मॉडल मानवता के लाभ के लिए और उसके बाद सभी जीवित प्राणियों के लाभ के लिए दुनिया के सभी हिस्सों को कवर करने के लिए क्यूरेट और स्केल-अप करने के लिए तैयार है। ब्रह्मांड के सभी जीवित प्राणी सर्वशक्तिमान ईश्वर की रचना हैं। लिंग-निरपेक्ष भाव से, समस्त मानव जाति की बेहतर सांसारिकता हेतु, समाज के ष्अंतिम, न्यूनतम, निम्नतम और गुमशुदाष व्यक्ति की सेवा करते हुए, अलैंगिक प्राणियों और फिर सभी जीवित प्राणियों की सेवा की ओर बढ़ने का हमारा महान लक्ष्य, दयालबाग जीवन पद्धति को प्रदर्शित करता है। इस संपूर्ण स्पेक्ट्रम को शुरू से अंत तक सर्वोत्कृष्टता के माध्यम से कवर करता है। यह कोई भव्य समापन नहीं है, बल्कि एक ऐसी प्रक्रिया है जो सभी जीवित प्राणियों की मुक्ति तक जारी रहेगी, जिसमें कोई भी निवासी निचले ध्रुव पर नहीं छोड़ा जाएगा। दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट में संस्थापक दिवस केवल एक अनुष्ठान नहीं हैय यह परम गुरु हुजूर डॉ. एमबी लाल साहब के दूरदर्शी पथ-प्रदर्शन और समग्र शिक्षा के प्रति डीईआई की स्थायी प्रतिबद्धता की मान्यता के लिए एक श्रद्धांजलि है। इस दिन, छात्र अपनी परियोजनाओं, सांस्कृतिक कार्यक्रमों, पाइप संगीत, उद्यमशीलता और अभिनव परिणामों को प्रदर्शित करके अपनी प्रतिभा और रचनात्मकता का प्रदर्शन करके सक्रिय रूप से भाग लेते हैं। यह उत्सव संस्थान की एकता, सहयोग और सफलता की भावना का प्रतीक है।

जैसे-जैसे डीईआई मूल्य-आधारित शिक्षा, अनुसंधान और रचनात्मक गतिविधियों के माध्यम से अपने छात्रों की क्षमता को उजागर करना जारी रखता है, यह संस्थापक दिवस, प्रेरणा, प्रतिबद्धता और आने वाले सभी समय के लिए दिन दूनी रात चैगुनी विकास के आशीर्वाद हेतु उनके प्रति कृतज्ञता का प्रतीक है।

आज आगरा महानगर ak आगरा, 30 जनवरी 2025 | 3

डीईआई 31 को मनाएगा संस्थापक दिवस समारोह

Sanjay Tiwari
January 29, 2025

आगरा, 29 जनवरी। दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी) में संस्थापक दिवस 31 जनवरी को मनाया जाएगा। इस दिन सुबह छह बजे से दोपहर तीन बजे तक विभिन्न कार्यक्रम होंगे।

डीईआई कुलसचिव प्रो आनंद मोहन, समन्वयक संगीता सैनी और प्रो राधाकृष्ण ने बुधवार को प्रेस वार्ता में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि इस दौरान केंद्रीय प्रदर्शनी मैदान पर सभी फैकल्टी के काउंटर लगाए जाएंगे, जिनमें उनकी उपलब्धियों के बारे में बताया जाएगा। इसके अलावा दयालबाग में निर्मित होने वाले विभिन्न उत्पादों की बिक्री के साथ ही खानपान के काउंटर भी लगाए जाएंगे। इनकी संख्या 51 तक होगी।

उन्होंने बताया कि यह स्थापना दिवस दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट के संस्थापक निदेशक, परम गुरु हुज़ूर डॉ. एम. बी. लाल साहब की जन्मदिवस पर मनाया जाता है।

इस बार इस कार्यक्रम में प्रदेश के करीब पच्चीस स्कूलों को भी आमंत्रित किया गया है। प्रत्येक स्कूल के प्रतिनिधिमंडल में 25 से 120 तक बच्चे हो सकते हैं। उन्हें डीईआई की उपलब्धियों के बारे में बताया जाएगा। प्रयोगशालाओं की भी जानकारी दी जाएगी। प्रेस वार्ता में कविता रायजादा भी मौजूद रहीं।

newsnazariyaa.blogspot.com/2025/01/31.html?m=1 ak

NEWS nazariya

Home चुनाव 2022 राजनीति आगरा शहर ताज महोत्सव व्यापार/उद्योग कोविड - 19

डीईआई ने 'स्थापना दिवस' मनाया

एडवोकेट सुरेखा यादव

आगरा। दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीईआई), एक प्रतिष्ठित संस्थान जो समग्र और संपूर्ण शिक्षा के लिए अपनी प्रतिबद्धता के लिए जाना जाता है, ने आज 31 जनवरी को अपने स्थापना दिवस को अद्वितीय उत्साह, जोश और उल्लास के साथ मनाया। यह दिन विशेष महत्व रखता है क्योंकि यह डीईआई के संस्थापक निदेशक परम गुरु हुजूर डॉ. एम बी लाल साहब की शुभ जयंती का प्रतीक है। राधास्वामी शिक्षण संस्थान की स्थापना के साथ 1917 में स्थापित, डीईआई की जड़ें लखनऊ विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. एम बी लाल साहब द्वारा तैयार की गई डीईआई की गहन दृष्टि और अभिनव शिक्षा नीति 1975 में हैं। संस्थान अपने छात्रों में सर्वांगीण विकास को बढ़ावा देने की प्रतिबद्धता के साथ वर्षों से उत्तरोत्तर विकसित हुआ है। शेष पृष्ठ ३ पर...

मण्डल भर के दो दर्जन स्कूलों के बच्चों ने देखा ओपन डे

इस अवसर पर आगरा सहित मंडलभर के दो दर्जन स्कूलों के बच्चों ने ओपन डे देखा। बसों में भर भर कर बच्चे और स्टाफ आया, उन्होंने ओपन डे का पूरा अवलोकन किया, कई लोगों से हमारी बातचीत हुई उन्होंने कहा कि बहुत अच्छा लगा दयालबाग का यह ओपन डे और जिसमें मैनपुरी, करहल, मथुरा मार्ट, फिरोजाबाद जनपद सहित कई जिलों की हमने बसे देखी हैं और स्टाफ भी देखा।

ओपन डे पर पीएस सत्संगी साहब ने खेतों पर फरमाए गए वचन

आगरा। आप जानते हैं कि दयालबाग विश्वविद्यालय के संस्थापक परम श्रद्धेय गुरु महाराज एम बी लाल साहब का आज 31 जनवरी को जन्मदिन था और इस दिन उन्होंने इस यूनिवर्सिटी की स्थापना की थी, डॉ लाल साहब ने शिक्षा नीति की योजना बनाई थी और इस योजना के आधार पर आज भी विश्वविद्यालय काम कर रहा है जिसमें रोजगार परक सारे कोर्सेज चलाए जाते हैं और इसी के चलते आज उन सारी गतिविधियों को सामने लाने के लिए ओपन डे मनाया जाता है, इस वजह से पूरी यूनिवर्सिटी के द्वार खुले रहते हैं जिसमें कोई भी जन सामान्य आकार यहां की जो गतिविधियां हैं उनको देख सकता है। और उन्हीं के जन्मदिन के अवसर पर आज पूरी यूनिवर्सिटी में ओपन डे मनाया गया। रा धा स्वा मी मत संतमत है, और दयालबाग भी संतों का निवास स्थान रहा है. इस मत में समय-समय पर संत अवतरित होते हैं और जाते भी रहते हैं क्योंकि प्रकृति का नियम अटल है और उसे कोई रोक नहीं सकता। आप जानते हैं कि प्रकृति एक बदलता हुआ प्रवाह है। इसी तरह संतों की जो वचन होते हैं वह भी समय समय पर बदलते रहते हैं। आज आपको मालूम है कि डॉक्टर एम बी लाल साहब का जन्मदिन था और सुबह के समय परम गुरु महाराज पी एस सत्संगी साहब ने खेतो पर वचन फरमाए और एक ऐसे शब्द पाठ की व्याख्या की। जिसकी दो पंक्तियां आपके सामने प्रस्तुत हैं। धन्य धन्य सखी भाग हमारे, धन्य गुरु का सँग रीझ इस शब्द पाठ की जो नई व्याख्या गुरु महाराज ने की जो यह है। धन्य धन्य के स्थान पर धुन धुन धुन को आध्यात्मिक ध्वनि माना है। उन्होंने सखी के स्थान पर साक्षी शब्द का प्रयोग किया है। परम श्रद्धेय गुरु महाराज के मुताबिक अब उस शब्द पाठ को हम इस तरह पढ़ सकते हैं जो हम नीचे लिख रहे हैं, धुन धुन धुन साक्षी भाग हमारे। सत्संगी साहब ने बताया कि तन का अर्थ है फिजिकल, मन का अर्थ है माइंड, और धुन का मतलब स्पिरिचुअल यानी (आध्यात्मिक)।

गरिमामयी परम्परा के १०५ वर्ष

Facebook E-Paper | आज आगरा | ऑन लाइन पढ़ने के लिए वेबसाइट पर क्लिक करें

आज

www.ajhindidaily.com

हिन्दी जगत में सर्वाधिक लोकप्रिय

मध्यप्रदेश-राजस्थान संस्करण

ak

नगर संस्करण पृष्ठ १२ | मूल्य ₹ ५

आगरा, 01 फरवरी 2025, शनिवार, वर्ष 39 अंक 30 सौर 19 माघ शुक्ल पक्ष तृतीय सं. 2081 वि.

वाराणसी, गोरखपुर, इलाहाबाद (रीवा संस्करण), कानपुर (झांसी संस्करण), लखनऊ, आगरा, बरेली, पटना, रांची (धनबाद संस्करण) तथा जमशेदपुर से प्रकाशित

दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट ने स्थापना दिवस धूमधाम से मनाया

वॉइस ऑफ आगरा

आगरा। दयालबाग, 31 जनवरी, 2025 दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (ऊएक), एक प्रतिष्ठित संस्थान जो समग्र और संपूर्ण शिक्षा के लिए अपनी प्रतिबद्धता के लिए जाना जाता है, ने आज 31 जनवरी को अपने स्थापना दिवस को अद्वितीय उत्साह, जोश और उल्लास के साथ मनाया। यह दिन विशेष महत्व रखता है क्योंकि यह ऊएकके संस्थापक निदेशक परम गुरु हुजूर डॉ. एम बी लाल साहब की शुभ जयंती का प्रतीक है। राधास्वामी शिक्षण संस्थान की स्थापना के साथ 1917 में स्थापित, ऊएक की जड़ें लखनऊ विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. एम बी लाल साहब द्वारा तैयार की गई ऊएक की गहन दृष्टि और अभिनव शिक्षा नीति 1975 में हैं। संस्थान अपने छात्रों में सर्वांगीण विकास को बढ़ावा देने की प्रतिबद्धता के साथ वर्षों से उत्तरोत्तर विकसित हुआ है संस्थापक दिवस समारोह, जिसे ओपन डे के रूप में भी जाना जाता है, में ऊएकके छात्रों, शिक्षकों और कर्मचारियों द्वारा की गई उपलब्धियों और पहलों का शानदार प्रदर्शन हुआ। पूरा परिसर गतिविधियों, प्रदर्शनों और रंग-बिरंगी सजावट से जीवंत हो उठा, जिससे अपार खुशी और उत्सव का माहौल बन गया। इस वर्ष के उत्सव में डीईआई के छात्रों की लगन और कड़ी मेहनत को प्रदर्शित किया गया, जिन्होंने अपने अभिनव प्रोजेक्ट और रचनात्मक कार्यों को विभिन्न मीडिया जैसे कि ग्राफिकल चार्ट, वर्किंग मॉडल, डिस्प्ले बोर्ड और इंटरएक्टिव गतिविधियों के माध्यम से प्रस्तुत किया। डीईआई में संकाय और केंद्रीय स्थानों दोनों पर व्यवस्था की रूपरेखा सावधानीपूर्वक बनाई गई थी, जिससे आगरा के आम लोगों और आमंत्रित आगंतुकों को अध्ययन और कार्य के विभिन्न क्षेत्रों में नई पहल और उच्च प्रदर्शन का पता लगाने का मौका मिला। कुल 51 स्टॉल लगाए गए थे, जिनमें कपड़ा, सिरेमिक और मिट्टी के बर्तन, जैविक खेती, कृषि प्रौद्योगिकी, ग्रीन हाउस प्रौद्योगिकी, पेटेंट, प्लेसमेंट, अनुसंधान, डेयरी प्रौद्योगिकी, 3-डी प्रिंटिंग, नैनो और क्वांटम विज्ञान, चेतना, ड्रोन, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस ऑनलाइन और दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम, चमड़ा प्रौद्योगिकी, अनुपम उपवन, उन्नत भारत अभियान, पूर्व छात्र नेटवर्क, कौशल विकास, खाद्य प्रसंस्करण, चिकित्सा शिविर, डीईआई शिक्षा नीति, डीईआई का इतिहास और केंद्रीय प्रशासन, प्रवेश और परीक्षा सहित कई अन्य क्षेत्रों से संबंधित मॉडल और गतिविधियों का प्रदर्शन किया गया। उत्तर प्रदेश के लगभग 50 स्कूलों के युवा स्कूली बच्चों ने भी परिसर का दौरा किया और डीईआई के कार्यों और उपलब्धियों का शानदार प्रदर्शन देखा, जिससे उन्हें अपने भविष्य के शैक्षणिक कैरियर और पेशेवर विकल्पों की योजना बनाने में भी मदद मिली। कुल मिलाकर, लगभग 10,000 लोग इस अवसर पर एकत्रित हुए और डीईआई परिसर का दौरा किया। डीईआई के छात्रों और कर्मचारियों द्वारा सुबह से देर दोपहर तक भक्ति संगीत का पाठ पूरे परिसर में गूंजता रहा, जिससे गहन दिव्यता और भक्ति का माहौल बन।

दयालबाग के कृषि-सह-परिशुद्धता खेती प्रक्षेत्र पर सुबह बुलाई गई सलाहकार समिति की बैठक के दौरान शिक्षा सलाहकार समिति के अध्यक्ष परम श्रद्धेय प्रोफेसर पी.एस. सत्संगी साहब की सम्मानित उपस्थिति ने इस अवसर की शोभा बढ़ाई। यह सभा विशेष रूप से डीईआई में उच्च शिक्षा कार्यक्रम का नेतृत्व करने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका के लिए श्रद्धेय डॉ. एमबी लाल साहब के चरण कमलों में हार्दिक श्रद्धा और कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए बुलाई गई थी।

दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट के स्थापना दिवस' पर रही धूम, प्रदर्शनी में बताए स्वस्थ्य रहने के टिप्स

ENVIRONMENTAL Friendly Study

iSPECIAL

tara.chandra@inext.co.in

पर्यावरण हमारे जीवन के लिए महत्वपूर्ण है. बढ़ती आबादी की मांगो को पूरा करने के लिए जमीन, से उगने वाली सब्जियों में अधिक मात्रा में कीटनाशक का प्रयोग किया जा रहा है. जिससे लोगों में तरह-तरह की बीमारियां पनप रही है. दयालबाग के स्टूडेंट्स ने शुक्रवार को इनवायरलमेंट फ्रेंडली स्टडी का संदेश दिया. इसके साथ ही तैयार किए गए. आयुर्वेद के पॉउडर और प्लांट सेल किए, लेमनग्रास, मौगरा, पत्थर चट्टा के फायदे भी बताए. जिससे वे हेल्दी और फिट बन सके.

स्टूडेंट्स के भीतर स्किल डेवलप

दयालबाग इंस्टीट्यूट संस्थान के संस्थापक निदेशक गुरु हुजूर डॉ. एमबी लाल साहब की जयंती को स्थापना दिवस के रूप में मनाया जाता है. राधास्वामी शिक्षा संस्थान की स्थापना के साथ 1917 में स्थापित, डीईआई की जड़ें लखनऊ विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. एमबी लाल साहब द्वारा तैयार की गई. संस्थान अपने छात्रों में विकास को बढ़ावा देने के लिए उनके भीतर स्किल को विकसित करता है. जिससे स्टूडेंट्स पढ़ाई के साथ स्वरोजगार भी सीख सके.

स्टूडेंट्स करते हैं ऑर्गेनिक खेती

दयालबाग के कृषि-सह-परिशुद्धता खेती कराई जाती है. शिक्षा सलाहकार समिति सत्संगी साहब की सम्मानित उपस्थिति ने इस अवसर की शोभा बढ़ाई. यह सभा में उच्च शिक्षा कार्यक्रम का नेतृत्व करने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका के लिए डॉ. एम और कृतज्ञता व्यक्त की. स्टूडेंट्स को स्टडी के साथ-साथ ऑर्गेनिक खेती करना के अध्यक्ष प्रो. पीएस सितेश स्वरूप से डीईआई लाल के हार्दिक श्रद्धा सिखाया जाता है.

"आज प्रदर्शनी में हमने ऐसे प्लांट को रखा है. जिसके सेवन से स्वस्थ्य रह सकते हैं. यहां आने वाले स्टूडेंट्स और उनके पैरेंट्स को प्लांट के फायदे के टिप्स शेयर किए गए हैं. इसके साथ ही प्लांट भी सेल किए गए हैं.

रिद्धी

स्टूडेंट्स ने लगाई एनवायरलमेंट फ्रेंडली स्टॉल

स्टूडेंट्स ने परिसर में 51 स्टॉल लगाए गए थे. जिनमें कपड़ा, सिरेमिक और मिट्टी के बर्तन, जैविक खेती, कृषि प्रौद्योगिकी, ग्रीन हाउस प्रौद्योगिकी, पेंटिंग, फर्नीचर, अनुसंधान, डेयरी प्रौद्योगिकी, 3-डी प्रिंटिंग, नैनो और क्वांटम विज्ञान, चेतना, ड्रोन, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस ऑनलाइन और दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम, चमड़ा प्रौद्योगिकी, अनुपम उपवन, उन्नत भारत अभियान, पूर्व छात्र नेटवर्क, कौशल विकास, खाद्य प्रसंस्करण, चिकित्सा शिविर, डीईआई शिक्षा नीति, डीईआई का इतिहास और केंद्रीय प्रशासन, प्रवेश और परीक्षा सहित कई अन्य क्षेत्रों से संबंधित मॉडल और गतिविधियों का प्रदर्शन किया गया.

दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट के स्थापना दिवस के मौके पर शुक्रवार को डीईआई कैंपस में ओपन डे का आयोजन किया गया. इसमें रखी विंटेज गाड़ियां आकर्षण का केंद्र रही. इसके अलावा कैंपस में मेड इन इंग्लैंड का स्टीम इंजन ट्रैक्टर भी लोगों को लुभाता रहा. यहां विजिट करने आए लोग सेल्फी लेते दिखाई दिए.

दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (DEI) ने 'स्थापना दिवस' धूमधाम से मनाया

निज संवाददाता

दयालबाग, 31 जनवरी, 2025 – दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीईआई), एक प्रतिष्ठित संस्थान जो समग्र और संपूर्ण शिक्षा के लिए अपनी प्रतिबद्धता के लिए जाना जाता है, ने आज 31 जनवरी को अपने स्थापना दिवस को अद्वितीय उत्साह, जोश और उल्लास के साथ मनाया। यह दिन विशेष महत्व रखता है क्योंकि यह डीईआई के संस्थापक निदेशक परम गुरु हुजूर डॉ. एम बी लाल साहब की शुभ जयंती का प्रतीक है। राधास्वामी शिक्षण संस्थान की स्थापना के साथ 1917 में स्थापित, डीईआई की जड़ें लखनऊ विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. एम बी लाल साहब द्वारा तैयार की गई डीईआई की महान दृष्टि और अभिनव शिक्षा नीति 1975 में है। संस्थान अपने छात्रों में सर्वांगीण विकास को बढ़ावा देने की प्रतिबद्धता के साथ वर्षों से उत्तरोत्तर विकसित हुआ है।

संस्थापक दिवस समारोह, जिसे ओपन डे के रूप में भी जाना जाता है, में डीईआई के छात्रों, शिक्षकों और कर्मचारियों द्वारा की गई उपलब्धियों और पहलों का शानदार प्रदर्शन हुआ। पूरा परिसर गतिविधियों, प्रदर्शनों और रंग-बिरंगी सजावट से जीवंत हो उठा, जिससे अपार खुशी और उत्सव का माहौल बन गया। इस वर्ष के उत्सव में डीईआई के छात्रों की लगन और कड़ी मेहनत को प्रदर्शित किया गया, जिन्होंने अपने अभिनव प्रोजेक्ट और रचनात्मक कार्यों को विभिन्न मीडिया जैसे कि ग्राफिकल चार्ट, वर्किंग मॉडल, डिस्प्ले बोर्ड और इंटरएक्टिव गतिविधियों के माध्यम से प्रस्तुत किया। डीईआई में संकाय और केंद्रीय स्थानों दोनों पर व्यवस्था की रूपरेखा सावधानीपूर्वक बनाई गई थी, जिससे आगरा के आम लोगों और आमंत्रित आगंतुकों को अध्ययन और कार्य के विभिन्न क्षेत्रों में नई पहल और उन्नत प्रदर्शन का पता लगाने का मौका मिला।

कुल 51 स्टॉल लगाए गए थे, जिनमें कपड़ा, सिरेमिक और मिट्टी के बर्तन, जैविक खेती, कृषि प्रौद्योगिकी, ग्रीन हाउस प्रौद्योगिकी, पेटेंट, प्लेसमेंट, अनुसंधान, डेयरी प्रौद्योगिकी, 3-डी प्रिंटिंग, नैनो और क्वांटम विज्ञान, चेतना, ड्रोन, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस ऑनलाइन और दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम, चमड़ा प्रौद्योगिकी, अनुसंधान उपक्रम, उन्नत भारत अभियान, पूर्व छात्र नेटवर्क, कौशल विकास, खाद्य प्रसंस्करण, चिकित्सा शिविर, डीईआई शिक्षा नीति, डीईआई का इतिहास और केंद्रीय प्रशासन, प्रवेश और परीक्षा सहित कई अन्य क्षेत्रों से संबंधित मॉडल और गतिविधियों का प्रदर्शन किया गया। उत्तर प्रदेश के लगभग 50 स्कूलों के युवा स्कूली बच्चों ने भी परिसर का दौरा किया और डीईआई के कार्यों और उपलब्धियों का शानदार प्रदर्शन देखा, जिससे उन्हें अपने भविष्य के शैक्षणिक कैरियर और पेशेवर विकल्पों की योजना बनाने में भी मदद मिली। कुल मिलाकर, लगभग 10,000 लोग इस अवसर पर एकत्रित हुए और डीईआई परिसर का दौरा किया। डीईआई के छात्रों और कर्मचारियों द्वारा सुबह से देर दोपहर तक भक्ति संगीत का पाठ पूरे परिसर में गूंजता रहा, जिससे गहन दिव्यता और भक्ति का माहौल बन गया।

इस महत्वपूर्ण अवसर पर दयालबाग के कृषि-सह-परिशुद्धता खेती प्रक्षेत्र पर सुबह बुलाई गई सलाहकार समिति की बैठक के दौरान शिक्षा सलाहकार समिति के अध्यक्ष परम श्रद्धेय प्रोफेसर पी.एस. सत्संगी साहब की सम्मानित उपस्थिति ने इस अवसर की शोभा बढ़ाई। यह सभा विशेष रूप से डीईआई में उच्च शिक्षा कार्यक्रम का नेतृत्व करने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका के लिए श्रद्धेय डॉ. एमबी लाल साहब के चरण कमलों में हार्दिक श्रद्धा और कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए बुलाई गई थी। यह बैठक समग्र शैक्षिक कार्यक्रमों के कार्यान्वयन के माध्यम से प्राप्त असाधारण प्रगति को उजागर करने के लिए एक मंच के रूप में कार्य करती है। दयालबाग शैक्षणिक संस्थानों की शिक्षा सलाहकार समिति के अध्यक्ष परम पूज्य प्रोफेसर पी.एस. सत्संगी साहब के दिव्य मार्गदर्शन में इन कार्यक्रमों ने और अधिक प्रगति की और नवाचार के साथ उत्कृष्टता प्राप्त की है। इस विशेष अवसर पर, प्रो. सत्संगी ने अपने अमूल्य भाषण में, सर्वोच्च आध्यात्मिकता के भंडार के उच्चतम निवास से लगातार निकलने वाली "धुन" (आध्यात्मिक ध्वनि या जाप) के सर्वोत्कृष्ट महत्व पर प्रकाश डाला, जिसे परम पुरुष पूरन धनी हुजूर स्वामी जी महाराज द्वारा दयालबाग, आगरा में स्थापित 'रा-धा-स्व-आ-मी' मत में वैज्ञानिक रूप से समझाया गया है। परम पूज्य प्रोफेसर पी.एस. सत्संगी साहब द्वारा दिए गए अमूल्य समय और आशीर्वाद ने संस्थापक दिवस समारोह में एक गहन आध्यात्मिक आयाम जोड़ा। संस्थापक दिवस समारोह ने अपनी शानदार विरासत का सम्मान करने और अपने दूरदर्शी नेताओं के उदार मार्गदर्शन में समग्र शिक्षा के सिद्धांतों को बनाए रखने के लिए डीईआई की गहरी प्रतिबद्धता का उदाहरण दिया।

डीईआई में संस्थापक दिवस केवल एक उत्सव नहीं है, यह उत्कृष्टता, नवाचार और अपने छात्रों के सर्वांगीण विकास के लिए संस्थान की प्रतिबद्धता का प्रमाण है। यह कार्यक्रम छात्रों को अपनी प्रतिभा दिखाने, एक-दूसरे से सीखने और संस्थान के विकास और प्रगति में योगदान देने के लिए एक सहकारी और सहयोगी मंच प्रदान करता है।

इस अवसर पर, डीईआई के प्रतिष्ठित कार्यक्रमों के अलावा, डॉ. बानी दयाल धीर द्वारा हाल ही में लॉन्च की गई पुस्तक "Travel Diaries with My Beloved Nana-Nani" की जानकारी भी साझा की गई। डॉ. बानी, जो डीईआई में अंग्रेजी विभाग की सहायक प्रोफेसर हैं, ने इस पुस्तक में अपनी नाना-नानी के साथ की गई यात्रा के दौरान मिली अनमोल जीवन की सीखों और आशीर्वादों को साझा किया है। यह पुस्तक राधास्वामी मत के दृष्टिकोण से आध्यात्मिक स्थलों के महत्व को उजागर करती है और परिवार, विशेष रूप से नाना-नानी के साथ बिताए गए समय की अमूल्य महत्ता को दर्शाती है। डॉ. बानी की नानी को सत्संग जगत में "रानी माँ" के रूप में सम्मानित किया जाता है, और उनके नाना राधास्वामी मत के छठे संत सतगुरु के रूप में पूज्य हैं। इस पुस्तक में भारतीय संस्कृति, आध्यात्मिकता और जीवन के उच्चतम आदर्शों को प्रस्तुत किया गया है, जो डीईआई के छात्रों के लिए प्रेरणा का एक और स्रोत है।

Travel Diaries with My Beloved Nana-Nani न केवल एक यात्रा वृत्तांत है, बल्कि यह जीवन को समझने, परिवार के संबंधों की कद्र करने और अपनी आध्यात्मिक और सांस्कृतिक धरोहर से जुड़ने की प्रेरणा भी देती है। डॉ. बानी का यह कार्य डीईआई की समग्र शिक्षा नीति और उसकी गहरी मानवीय और आध्यात्मिक प्रतिबद्धता के साथ पूर्ण रूप से मेल खाता है।

डीईआई में कल मनेगा संस्थापक दिवस

दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीईआइ) में संस्थापक दिवस 31 जनवरी मनाया जाएगा. कार्यक्रम को खास बनाने के लिए तैयारियां शुरू हो गई हैं. शु सुबह छह बजे से दोपहर तीन बजे तक विभिन्न कार्यक्रम होंगे. बुधवार को 3 प्रेस वार्ता में डीईआइ के कुलसचिव प्रो. आनंद मोहन ने बताया कि केंद्रीय प्र मैदान पर सभी फैकल्टी के काउंटर लगेंगे. सभी काउंटर में उनकी उपलब्धि के बारे में बताया जाएगा. साथ दयालबाग के विभिन्न उत्पादों की बिक्री के स खानपान के 51 काउंटर भी लगेंगे. यह दिवस दयालबाग एजुकेशनल इंस्टी के संस्थापक निदेशक, परम गुरु हुजूर डा. एमबी लाल साहब के जन्मदिव मनाया जाता है. प्रदेश के करीब 25 स्कूलों को भी आमंत्रित किया गया है. प्र स्कूल के प्रतिनिधिमंडल में 25 से 120 तक बच्चे हो सकते हैं. मौके पर सम संगीता सैनी, प्रो. राधाकृष्ण, कविता रायजादा मौजूद रहीं .

दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीटयूट में 31 जनवरी को संस्थापक दिवस समारोह।

पूज्य डॉ. एम. बी. लाल साहब के विजन, मूल्यों और विरासत को श्रद्धांजलि।

ब्यूरोचीफ कृष्णा त्यागी
परिधि समाचार आगरा।।

दयालबाग के शांत वातावरण में स्थित, दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीईआई) के लिए हर साल संस्थापक दिवस 31 जनवरी का विशेष महत्व है। 31 जनवरी का पावन दिवस, दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी) के संस्थापक निदेशक, परम गुरु हुजूर डॉ. एम. बी. लाल साहब का शुभ जन्मदिन है, यह दिन उनके पावन चरणकमलों में श्रद्धांजलि अर्पित करने एवं उत्सव मनाने का एक विशेष दिन है।

डीईआई की शिक्षा नीति (1975), जिसकी कल्पना और क्रियान्वयन डीईआई (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी) के सर्वोच्च वास्तुकार और संस्थापक निदेशक पूज्य डॉ. मकुंद बिहारी लाल साहब, दयालबाग में रा–धा–स्व–आ–मी मत के सातवें आध्यात्मिक आचार्य, ने की थी, 1986 और 2020 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति का अग्रदूत है। इस दूरदर्शी दृष्टिकोण ने डीईआई को राष्ट्रीय एजेंडे से कई साल पहले शैक्षिक सुधारों की कल्पना करते हुए एक प्रर्वतक के रूप में स्थापित किया। डीईआई का शैक्षिक ढांचा अपनी विशिष्ट विशेषताओं द्वारा चिह्नित है, जो एक पूर्ण व्यक्ति या सुपरह्यूमन के समग्र विकास पर जोर देता है। सुपरमैन बनाने की प्रक्रिया को सुपरह्यूमन इवोल्यूशनरी स्कीम के माध्यम से नए सिरे से बल मिला है। दुनिया भर में फैले ये सुपरह्यूमन, अपने जीवन की प्रारंभिक अवस्था से ही सत्संग संस्कृति को आत्मसात कर रहे हैं, और ये सुपरह्यूमन, भविष्य में विश्व स्तर पर, दयालबाग जीवन शैली के राजदूत के रूप में, मानवता को सही मायने में सतत विकास का सही रास्ता दिखायेंगे। डीईआई की शिक्षा नीति के अंतःविषय–विकल्प, कार्य–आधारित प्रशिक्षण और मुख्य पाठ्यक्रम यह सुनिश्चित करते हैं कि छात्रों को न केवल शैक्षणिक उत्कृष्टता प्राप्त हो, बल्कि वे व्यावहारिक कौशल, सांस्कृतिक शिक्षा और सामाजिक जिम्मेदारी की भावना से भी ओतप्रोत हों। आधुनिक स्वास्थ्य सेवा आवास और आत्मरक्षा का मॉडल मानवता के लाभ के लिए और उसके बाद सभी जीवित प्राणियों के लाभ के लिए दुनिया के सभी हिस्सों को कवर करने के लिए क्यूरेट और स्केल–अप करने के लिए तैयार है।ब्रह्मांड के सभी जीवित प्राणी सर्वशक्तिमान ईश्वर की रचना हैं।

लिंग–निरपेक्ष भाव से, समस्त मानव जाति की बेहतर सांसारिकता हेतु, समाज के ‘अंतिम, न्यूनतम, निम्नतम और गुमशुदा’ व्यक्ति की सेवा करते हुए, अलैंगिक प्राणियों और फिर सभी जीवित प्राणियों की सेवा की ओर बढ़ने का हमारा महान लक्ष्य, दयालबाग जीवन पद्धति को प्रदर्शित करता है।

शुरुआत पश्चिमी जोन से की गई है। स्वरूप में बदलना और कार्य प्रवाह

डीईआइ में कल मनेगा संस्थापक दिवस

जासं, आगरा: दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीईआइ) में संस्थापक दिवस 31 जनवरी को मनाया जाएगा। कार्यक्रम को खास बनाने के लिए तैयारियां शुरू हो गई हैं। शुक्रवार सुबह छह बजे से दोपहर तीन बजे तक विभिन्न कार्यक्रम होंगे। बुधवार को आयोजित प्रेस वार्ता में डीईआइ के कुलसचिव प्रो. आनंद मोहन ने बताया कि केंद्रीय प्रदर्शनी मैदान पर सभी फैकल्टी के काउंटर जागेंगे। सभी काउंटर में उनकी उपलब्धियों के बारे में बताया जाएगा। साथ दयालबाग के विभिन्न उत्पादों की बिक्री के साथ ही खानपान के 51 काउंटर भी लगेंगे। यह दिवस दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट के संस्थापक निदेशक, परम गुरु हुजूर डा. एमबी लाल साहब के जन्मदिवस पर मनाया जाता है। प्रदेश के करीब 25 स्कूलों को भी आमंत्रित किया गया है। प्रत्येक स्कूल के प्रतिनिधिमंडल में 25 से 120 तक बच्चे हो सकते हैं। मौके पर समन्वयक संगीता सैनी, प्रो. राधाकृष्ण, कविता रायजादा मौजूद रहीं।

आगरा | बृहस्पतिवार • 30.01.2025

अमर उजाला 05

ले कमरों परीक्षाएं

ा परिषद ने जारी किए निर्देश

सुरक्षित रखनी होगी रिकॉर्डिंग

प्रयोगात्मक परीक्षाएं वॉयस रिकॉर्डर युक्त सीसीटीवी कैमरों की निगरानी में ही कराई जाएंगी। विद्यालयों के प्रधानाचार्य को रिकॉर्डिंग सुरक्षित रखने के निर्देश दिए गए हैं। प्रयोगात्मक परीक्षाओं में अनियमितताओं को रोकने के लिए रैंडम आधार पर 5 प्रतिशत विद्यालयों का ऑडिट किया जाएगा, ताकि किसी भी प्रकार की अनियमितता पर सख्त कार्रवाई की जा सके। इसमें जिम्मेदारों पर कार्यवाही के साथ ही वित्तविहीन विद्यालयों की मान्यता भी रद्द की जा सकती है।

यता
सके
क्षक
रिक
भाग

के एप पर फोटो अपलोड करना होगा। परीक्षकों को प्रैक्टिकल के अंक भी उसी दिन एप के माध्यम से ऑनलाइन फीड करने होंगे। इसमें किसी भी तरह की लापरवाही नहीं बरतने को कहा गया है।

संस्थापक दिवस पर इस बार सभी के लिए खुलेगा डीईआई

आगरा। दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीईआई) (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी) का संस्थापक दिवस 31 जनवरी को ओपन डे के रूप में मनाया जाएगा। जिसमें विश्वविद्यालय में संचालित पाठ्यक्रमों की जानकारी एक ही स्थान पर प्राप्त कोई भी व्यक्ति प्राप्त कर सकेगा इसके लिए 51 स्टॉल ओपन डे में लगेंगी।

ओपन डे में इस बार आगरा मंडल के विभिन्न विद्यालयों के छात्र भी शामिल होंगे कुलसचिव डॉ. आनंद मोहन ने बताया कि प्रदर्शनी सभी के लिए खुली है। ओपन डे की समन्वयक प्रो. संगीता सैनी ने बताया कि इस बार डीईआई की सात फैकल्टी सहित संस्था से जुड़े 12 संस्थान अपने कार्य को प्रदर्शित करेंगे। सह समन्वयक डॉ. एम. राधा कृष्ण ने बताया कि छात्र अपने वर्किंग, नॉन वर्किंग मॉडल प्रस्तुत करेंगे। प्रदर्शनी विज्ञान संकाय (साइंस फैकेल्टी) के मैदान पर लगाई जाएगी। कार्यक्रम में मंडल के करीब 25 स्कूलों को भी आमंत्रित किया गया है। प्रत्येक स्कूल के प्रतिनिधिमंडल में 25 से 120 तक बच्चे हो सकते हैं। संवाद

paper.livehindustan.com

ानकारी के विवरण को अनिवार्य रूप से भरें।
भरने के बाद पासपोर्ट साइज फोटो और
कॉपी अपलोड करें। फोटो की साइज 50
होनी चाहिए। वहीं, हस्ताक्षर की साइज 20
हो।
ज फोटो और हस्ताक्षर अपलोड करने के बाद
प्रमाण पत्र, शैक्षणिक प्रमाण पत्र, अनुभव
अंकपत्र, जाति प्रमाण पत्र (यदि लागू हो तो)
संबंधित दस्तावेज एक-एक कर निर्धारित
लोड करें।
मिट करने से पहले भरे हुए आवेदन पत्र की
। अंत में सब्मिट बटन पर क्लिक कर आवेदन
कर दें। इसके बाद आपकी आवेदन प्रक्रिया
ी।
ावेदन सब्मिट करने के बाद इसका फाइनल
कर सुरक्षित रख लें।
किसी प्रकार के पत्राचार हेतु आवेदन पत्र में
स्ट्रेशन नंबर का उल्लेख करना होगा।

पर भर्तियां की जाएगी। योग्य एवं इच्छुक अभ्यर्थी ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं। आवेदन करने की अंतिम तिथि 31 जनवरी 2025 निर्धारित की गई है।

योग्यता

- पदानुसार भौतिकी/रसायन विज्ञान में स्नातकोत्तर डिग्री होनी चाहिए। स्टैटिस्टिक्स का ज्ञान हो और कपड़ा परीक्षण और प्रौद्योगिकी में अनुसंधान अनुभव हो।
- टेक्सटाइल इंजीनियरिंग में डिग्री होनी चाहिए साथ ही पांच वर्ष का कार्य अनुभव हो।
- गणित में स्नातकोत्तर डिग्री और पांच वर्ष का कार्य अनुभव हो।
- टेक्सटाइल मैन्युफैक्चर/टेक्नोलॉजी या भारतीय हथकरघा प्रौद्योगिकी संस्थान, वाराणसी/सलेम से हैंडलूम टेक्नोलॉजी में डिग्री या डिप्लोमा हो।
- मास्टर डिग्री या टेक्सटाइल टेस्टिंग/टेक्सटाइल केमिस्ट्री

का कार्यानुभव होना
- विज्ञान या प्रौद्योगिकी मे
केमिस्ट्री या टेक्नोलो

आयु सीमा : अधिकतम
वेतनमान : 29,200-1
चयन प्रक्रिया : कंप्यूटर
के आधार पर चयन होगा

आवेदन शुल्क

- ग्रुप ए के सामान्य वर्ग
लिए 1,500 रुपये।
वर्ग और ओबीसी/ई
देय है। अनुसूचित जा
दिव्यांगों के लिए कोई

आधिकारिक वेबसाइ
committee.ni

ध्यान दें: इस पृष्ठ के तहत प्रकाशित सूचनाएं विभिन्न स्रोतों से जुटाई जाती हैं। आवेदन क
पहले इसकी पड़ताल विभाग की आधिकारिक वेबसाइट से कर लें।

ओपन डे में खुलेंगे डीईआई के द्वार

आगरा, वरिष्ठ संवाददाता। दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीईआई) के द्वार आम लोगों के लिए खुलेंगे। 31 जनवरी को संस्थान अपना ओपन डे आयोजित करेगा। इसमें संस्थान में हो रही पढ़ाई, शोध कार्य और अविष्कार से लेकर संस्थान की ओर से लाए जा रहे बदलावों को देख सकेंगे। संस्थान में फाउंडर डे की जानकारी दी गयी।

संस्थान के कुलसचिव डॉ. आनंद मोहन ने कहा कि डीईआई छात्रों को वर्ल्ड क्लास शिक्षा दे रहा है। इसके साथ ही छात्रों में नैतिक मूल्यों का विकास कर रहा है। संस्थान की विभिन्न

31 जनवरी को किया जाएगा ओपन डे का आयोजन

फैकल्टी में होने वाले कार्यों को देखने का अवसर ओपन डे (फाउंडर डे) में मिलेगा। संस्थान में संचालित पाठ्यक्रमों के बारे में पूरी जानकारी सभी फैकल्टी एक ही स्थान पर देंगी। इसके लिए 51 स्टॉल ओपन डे में लगेंगी। ओपन डे में इस बार आगरा मंडल के विभिन्न विद्यालयों के छात्र भी शामिल होंगे। ओपन डे की समन्वयक प्रो. संगीता सैनी ने बताया कि इस बार डीईआई की सात फैकल्टी सहित संस्था से जुड़े 12 संस्थान अपने कार्य को प्रदर्शित करेंगे। सह समन्वयक डॉ. एस. राधाकृष्ण ने बताया कि ओपन डे के दौरान छात्र अपने वर्किंग, नॉन वर्किंग मॉडल प्रस्तुत करेंगे। इसके साथ ही पोस्टर और पेपर के माध्यम से भी संस्थान के गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा कार्यों को प्रदर्शित करेंगे। इसके साथ ही डीईआई की ओर से तैयार किए गए उत्पाद, ऑर्गेनिक खेती के उत्पाद भी बिक्री के लिए उपलब्ध होंगे। इस मौके पर मीडिया समन्वयक कविता रायजादा उपस्थित रहीं।

दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट में 31 जनवरी को संस्थापक दिवस

राधा-स्वामी मत के सातवें आध्यात्मिक आचार्य, ने की थी डीईआई की स्थापना

पोक टाइम आगरा। समारोह पूज्य डॉ. एम. बी. लाल साहब के विजन, मूल्यों और विरासत को श्रद्धांजलि दयालबाग के शांत वातावरण में स्थित, दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीईआई) के लिए हर साल संस्थापक दिवस 31 जनवरी का विशेष महत्व है। 31 जनवरी का पावन दिवस, दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी) के संस्थापक निदेशक, परम गुरु हुजूर डॉ. एम. बी. लाल साहब का शुभ जन्मदिन है, यह दिन उनके पावन चरणकमलों में श्रद्धांजलि अर्पित करने एवं उत्सव मनाने का एक विशेष दिन है। डीईआई की शिक्षा नीति (1975), जिसकी कल्पना और क्रियान्वयन डीईआई (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी) के सर्वोच्च वास्तुकार और संस्थापक निदेशक पूज्य डॉ. मकुंद बिहारी लाल साहब,

दयालबाग में राधा-स्वामी मत के सातवें आध्यात्मिक आचार्य, ने की थी, 1986 और 2020 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति का अग्रदूत है। इस दूरदर्शी दृष्टिकोण ने डीईआई को राष्ट्रीय एजेंडे से कई साल पहले शैक्षिक सुधारों की कल्पना करते हुए एक प्रवर्तक के रूप में स्थापित किया। डीईआई का शैक्षिक ढांचा अपनी विशिष्ट विशेषताओं द्वारा चिह्नित है, जो एक पूर्ण व्यक्ति या सुपरह्यूमन के समय विकास पर जोर देता है। सुपरमैन बनाने की प्रक्रिया को सुपरह्यूमन इवोल्यूशनरी स्कीम के माध्यम से नए सिरे से बल मिला है। दुनिया भर में फैले ये सुपरह्यूमन, अपने जीवन की प्रारंभिक अवस्था से ही सत्संग संस्कृति को आत्मसात कर रहे हैं, और ये सुपरह्यूमन, भविष्य में विश्व स्तर पर, दयालबाग जीवन शैली के राजदूत के रूप में, मानवता को सही मायने में सतत विकास का सही रास्ता दिखायेंगे। डीईआई की शिक्षा नीति के अंतःविषय-विकल्प, कार्य-आधारित प्रशिक्षण और मुख्य पाठ्यक्रम यह सुनिश्चित करते हैं कि छात्रों को न केवल शैक्षणिक उत्कृष्टता प्राप्त हो, बल्कि वे व्यावहारिक कौशल, सांस्कृतिक शिक्षा और सामाजिक जिम्मेदारी की भावना से भी ओतप्रोत हो। आधुनिक स्वास्थ्य सेवा आवास और आत्मरक्षा का मॉडल मानवता के लाभ के लिए और उसके बाद सभी जीवित प्राणियों के लाभ के लिए दुनिया के सभी हिस्सों को कवर करने के लिए क्यूरेट और स्केल-अप करने के लिए तैयार है। ब्रह्मांड के सभी जीवित प्राणी सर्वशक्तिमान ईश्वर की रचना हैं। लिंग-निरपेक्ष भाव से, समस्त मानव जाति की बेहतर सांसारिकता हेतु, समाज के "अंतिम, न्यूनतम, निम्नतम और गुमशुदा" व्यक्ति की सेवा करते हुए, अलैंगिक प्राणियों और फिर सभी जीवित प्राणियों की सेवा की ओर बढ़ने का हमारा महान लक्ष्य, दयालबाग जीवन-पद्धति को प्रदर्शित करता है। इस संपूर्ण स्पेक्ट्रम को शुरू से अंत तक सर्वोत्कृष्टता के माध्यम से कवर करता है। यह कोई भव्य समापन नहीं है, बल्कि एक ऐसी प्रक्रिया है जो सभी जीवित प्राणियों की मुक्ति तक जारी रहेगी, जिसमें कोई भी निवासी निचले ध्रुव पर नहीं छोड़ा जाएगा। दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट में संस्थापक दिवस केवल एक अनुष्ठान नहीं है; यह परम गुरु हुजूर डॉ. एमबी लाल साहब के दूरदर्शी पथ-प्रदर्शन और समग्र शिक्षा के प्रति डीईआई की स्थायी प्रतिबद्धता की मान्यता के लिए एक श्रद्धांजलि है। इस दिन, छात्र अपनी परियोजनाओं, सांस्कृतिक कार्यक्रमों, पाइप संगीत, उद्यमशीलता और अभिनव परिणामों को प्रदर्शित करके अपनी प्रतिभा और रचनात्मकता का प्रदर्शन करके सक्रिय रूप से भाग लेते हैं। यह उत्सव संस्थान की एकता, सहयोग और सफलता की भावना का प्रतीक है। जैसे-जैसे डीईआई मूल्य-आधारित शिक्षा, अनुसंधान और रचनात्मक गतिविधियों के माध्यम से अपने छात्रों की क्षमता को उजागर करना जारी रखता है, यह संस्थापक दिवस, प्रेरणा, प्रतिबद्धता और आने वाले सभी समय के लिए दिन दूनी रात चौगुनी विकास के आशीर्वाद हेतु उनके प्रति कृतज्ञता का प्रतीक है।

सेंट सी एफ एंड्रूज स्कूल के छात्र अर्णव सिकरवार ने जीता काशी में स्वर्ण पदक

पोक टाइम आगरा। सेंट सी. एफ. एंड्रूज स्कूल हाथरस रोड आगरा के ब्लैक बेल्ट धारक एनआईएस कोच शिवम कुमार गुप्ता ने बताया कि छात्र अर्णव सिकरवार ने काशी में आयोजित 5वीं काशी चैलेंज कप में स्वर्ण पदक जीतकर

अपने आगरा जिले व विद्यालय का नाम रोशन किया है। यह प्रतियोगिता 16 से 18 जनवरी के बीच जेनेसिस इंटरनेशनल स्कूल, शिवपुरी में आयोजित की गई थी। अर्णव सिकरवार सेंट सी एफ एंड्रूज स्कूल के 5वीं कक्षा के छात्र हैं, पहले भी कई प्रतियोगिताओं में पदक जीतकर अपनी प्रतिभा का परिचय दे चुके हैं। उनकी इस उपलब्धि से न केवल उनके स्कूल बल्कि पूरे आगरा जिले को गर्व हुआ है। उनकी मेहनत और समर्पण ने उन्हें इस मुकाम तक पहुंचाया। इस शानदार उपलब्धि के उपलक्ष्य में स्कूल प्रांगण में भव्य स्वागत समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर स्कूल के एमडी प्रांजल शर्मा, प्रधानाचार्य डॉ. सुनील उपाध्याय, उप-प्रधानाचार्य रीनू त्रिवेदी, उदय परिहार, विवेक शर्मा और बरखा अग्निहोत्री ने अर्णव का सम्मान किया और उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। कोच शिवम कुमार गुप्ता ने अर्णव की मेहनत और लगन की प्रशंसा करते हुए उन्हें आगामी प्रतियोगिताओं के लिए प्रोत्साहित किया।

आस्था के सबसे बड़े पर्व पर सरकार की लापरवाही ने बुझा दिए कई घरों के चिरागः पं. सिद्धार्थ चतुर्वेदी

पोक टाइम आगरा। प्रयागराज महाकुंभ में हुई जनहानि पर एक प्रेस विज्ञप्ति के माध्यम से आम आदमी पार्टी के आगरा जिलाध्यक्ष पंडित सिद्धार्थ चतुर्वेदी ने अपने ब्यान में कहा है कि महाकुंभ में हुई त्रासदी में जान गंवाने वाले श्रद्धालुओं को मेरी गहरी श्रद्धांजलि एवं घायलों के लिए सहानुभूति है। यह केवल एक दुर्घटना नहीं, बल्कि व्यवस्था की नाकामी का जीता-जागता प्रमाण है। आस्था के सबसे बड़े पर्व पर सरकार की लापरवाही ने कई घरों के चिराग बुझा दिए। सिद्धार्थ चतुर्वेदी ने कहा है कि प्रशासन की तैयारियों के बड़े-बड़े दावे पानी में बह गए, और एक बार फिर अव्यवस्था, भीड़ नियंत्रण की असफलता और सुरक्षा इंतजामों की पोल खुल गई। सत्ता में बैठे लोग जब प्रचार और राजनीतिक रैलियों में व्यस्त हों, तो आम जनता की जान की कीमत बस एक आंकड़ा बनकर रह जाती है। क्या यही सुशासन है? क्या यही विकास का दावा है? श्रद्धालुओं की भीड़ को नियंत्रित करने के लिए पर्याप्त इंतजाम क्यों नहीं किए गए? सवाल सिर्फ मौतों का नहीं, बल्कि उस संवेदनहीनता का भी है जो हर बार ऐसी घटनाओं के बाद

सरकार की चुप्पी में झलकती है। उन्होंने कहा कि जनता सिर्फ श्रद्धांजलि नहीं, बल्कि जवाब भी चाहती है। क्या दोषियों पर कोई कार्रवाई होगी, या हमेशा की तरह मुआवजे की चंद रकम देकर इस त्रासदी को भुला दिया जाएगा? -पीटी

'टीम पापा' अविभावक हित की आवाज, झूठ फैलाने वालों को न्यायालय देगा सजा : मनोज शर्मा

पोक टाइम आगरा। आगरा प्रोग्रेसिव एशोसिएशन ऑफ पेरेंट्स टीम पापा के संस्थापक मनोज शर्मा ने बताया है कि आगरा में अविभावकों की आवाज बुलंद कर कोविड महामारी के दौरान मैंने अन्य अविभावकों के साथ इस शोषण के खिलाफ सबसे पहले संघर्ष का एलान किया जो आज भी तरीख के हिसाब से सम्मानित मीडिया प्रकाशन में सुरक्षित होगा। अविभावकों की एकता देख कुछ स्वार्थी लोगो ने भी आंदोलन के साथ आकर अपने निज स्वार्थ पूर्ति हेतु सहभागिता करनी शुरू की। एक स्वार्थी व्यक्ति ने संस्था का रजिस्ट्रेशन करवाने के लिये खुद को आगे रखा, संस्था में तय किया गया सभी लोग सामान रहेंगे, वावजूद इसके षडयंत्र के तहत एक व्यक्ति ने यह प्रस्ताव रखा कि पहले हम मात्र पाँच छः लोग रजिस्ट्रेशन करवा लें बाद में और लोगों को शामिल कर लेंगे सभी लोगो को एक साथ रखने में रजिस्ट्रेशन में देर होगी, उक्त व्यक्ति ने संस्था के पते पर अपने घर का पता दर्ज करवा

दिया, व खुद को मुख्य ट्रस्टी दर्ज करवा दिया, जबकि संस्था की बैठकें, मिश्रा कॉम्प्लेक्स पर होती थी। फिर भी सभी ने विश्वास में आकर हस्ताक्षर कर दिये। उक्त व्यक्ति ने संस्था के सामने प्रस्ताव रखा कि अगर उसे कमेटी गठित कर राष्ट्रीय अध्यक्ष बना दिया जाता है तो वह पूरे प्रदेश में इसका गठन कर संस्था के मार्फत अविभावकों को लाभ दिलवाने का एक सफल कार्य होगा। यही संस्था की सबसे बड़ी भूल थी, जिसके बाद उक्त व्यक्ति ने अपनी स्वार्थ सिद्धि को अंजाम देना शुरू किया, उक्त व्यक्ति ने संस्था को अपनी निजी सम्पत्ति मान कर मनमानियां शुरू कर दीं। मजबूरन संस्था को उक्त व्यक्ति को निष्काषित करना पड़ा। मनोज शर्मा ने बताया कि उक्त व्यक्ति ने उसके बाद बौखला कर संस्था को नियम विरुद्ध खत्म करने की घोषणा की व संस्था के मिलते जुलते नाम से अपना एक नया ट्रस्ट बनाकर संस्था की संपत्ति हड़प कर अपनी स्वार्थ सिद्धि को पूरा करने के लिए काम शुरू किया और टीम पापा के मिशन को कमजोर करने का कार्य किया। न्यायालय में संस्था संस्थापक अरुण मिश्रा को वादी बना कर दीपक सरीन बनाम अरुण मिश्रा व अन्य के खिलाफ झूठे आरोप लगा कर अपनी मान हानि का वाद कायम कर दिया। संस्था की ओर से एक बाद प्रोग्रेसिव ऐसोसिएशन ऑफ पेरेंट्स टीम पापा बनाम दीपक सरीन के नाम, परिवाद संख्या -4577 / 2022 को दर्ज करवाया गया। न्यायालय ने पक्ष सुनकर दीपक सरीन को भा0 द0 सा की धारा 420 के अंतर्गत अभियुक्त मानते हुये, सम्मन जारी किये, सम्मन तमिल के बाद भी हाजिर न होने वॉरंट व गैर जमानती वॉरंट जारी किये, दीपक सरीन को हाईकोर्ट से जमानत करवानी पड़ी।अपनी सजा के डर से भयभीत वह लगातार उटपटांग हरकते कर अपने आप को ही संस्था का स्वामी बताता है, जबकि प्रोग्रेसिव एसोसिएशन ऑफ पेरेंट्स - टीम पापा (रजि0 नम्बर जो बही संख्या - 4 जिल्द संख्या - 672 के पृष्ठ 157 से 180 के क्रमांक 215) दिनांक 27 - 07 - 2020 से उक्त व्यक्ति का कोई सम्बद्ध नहीं है। उक्त संस्था के संस्थापक मनोज शर्मा, अरुण मिश्रा, प्रवीन सक्सेना, शोभित जेतली, अमर सिंह सेंगर, दीपक वर्मा व अरुण भाटिया हैं। संस्था ने संस्था का संरक्षक मनोज शर्मा को चुन रखा है। उन्होंने कहा कि दीपक सरीन ने हमारी संस्था के मिलते जुलते नाम से अपनी अलग संस्था, हमारी संस्था से निष्कासित होने के उपरांत अपने स्वार्थ सिद्धि के लिए बनाई है। उक्त व्यक्ति का अविभावक हितकारी वास्तविक संस्था प्रोग्रेसिव एसोसिएशन ऑफ पेरेंट्स - टीम पाप ा से कोई लेना देना नहीं है। हमारी संस्था सभी अविभावकों से अनुरोध करती है, कि टीम पापा के नाम से अगर कोई भी व्यक्ति दान अथवा सदस्यता शुल्क आदि के नाम रुपये माँगता है, तो इसमें संस्था की कोई जिम्मेदारी नही होगी।

हमारा संघर्ष अविभावक व विद्यार्थी हितों की रक्षा के लिये, निजी विद्यालयों के शोषण के खिलाफ है व जारी रहेगा।

प्रकाशक, मुद्रक, स्वामी: मनोज गोयल के लिए मुद्रण प्रेस : पोक टाइम 83 ए लोहिया नगर बल्केश्वर , आगरा 282004 (उ०प्र०) द्वारा आगरा से मुद्रित, 83 ए लोहिया नगर बल्केश्वर आगरा 282004 (उ०प्र०) से प्रकाशित।
संपादक : मनोज गोयल मो. न.-8171803148 पंजीयन संख्या- msme r.n. UP01A0052099 ईमेल- "poketime538@gmail.com उप सम्पादक - मनीष भारद्वाज, प्रबंध सम्पादक- केपी सिंह

शुक्रवार 31 जनवरी 2025 श्योपुर एक्सप्रेस

दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट में 31 जनवरी को संस्थापक दिवस समारोह

पूज्य डॉ. एम. बी. लाल साहब के विजन, मूल्यों और विरासत को श्रद्धांजलि

निज संवाददाता

दयालबाग के शांत वातावरण में स्थित, दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीईआई) के लिए हर साल संस्थापक दिवस 31 जनवरी का विशेष महत्व है। 31 जनवरी का पावन दिवस, दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी) के संस्थापक निदेशक, परम गुरु हुजूर डॉ. एम. बी. लाल साहब का शुभ जन्मदिन है, यह दिन उनके पावन चरणकमलों में श्रद्धांजलि अर्पित करने एवं उत्सव मनाने का एक विशेष दिन है।

डीईआई की शिक्षा नीति (1975), जिसकी कल्पना और क्रियान्वयन डीईआई (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी) के सर्वोच्च वास्तुकार और संस्थापक निदेशक पूज्य डॉ. मकुंद बिहारी लाल साहब, दयालबाग में रा-धा-स्व-आ-मी मत के सातवें आध्यात्मिक आचार्य, ने की थी, 1986 और 2020 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति का अग्रदूत है। इस दूरदर्शी दृष्टिकोण ने डीईआई को राष्ट्रीय एजेंडे से कई साल पहले शैक्षिक सुधारों की कल्पना करते हुए एक प्रवर्तक के रूप में स्थापित किया। डीईआई का शैक्षिक ढांचा अपनी विशिष्ट विशेषताओं द्वारा चिह्नित है, जो एक पूर्ण व्यक्ति या सुपरह्यूमन के समग्र विकास पर जोर देता है। सुपरमैन बनाने की प्रक्रिया को सुपरह्यूमन इवोल्यूशनरी स्कीम के माध्यम से नए सिरे से बल मिला है। दुनिया भर में फैले ये सुपरह्यूमन, अपने जीवन की प्रारंभिक अवस्था से ही सत्संग संस्कृति को आत्मसात कर रहे हैं, और ये सुपरह्यूमन, भविष्य में विश्व स्तर पर, दयालबाग जीवन शैली के राजदूत के रूप में, मानवता को सही मायने में सतत विकास का सही रास्ता दिखायेंगे। डीईआई की शिक्षा नीति के अंतःविषय-विकल्प, कार्य-आधारित प्रशिक्षण और मुख्य पाठ्यक्रम यह सुनिश्चित करते हैं कि छात्रों को न केवल शैक्षणिक उत्कृष्टता प्राप्त हो, बल्कि वे व्यावहारिक कौशल, सांस्कृतिक शिक्षा और सामाजिक जिम्मेदारी की भावना से भी ओतप्रोत हों। आधुनिक स्वास्थ्य सेवा आवास और आत्मरक्षा का मॉडल मानवता के लाभ के लिए और उसके बाद सभी जीवित प्राणियों के लाभ के लिए दुनिया के सभी हिस्सों को कवर करने के लिए क्यूरेट और स्केल-अप करने के लिए तैयार है। ब्रह्मांड के सभी जीवित प्राणी सर्वशक्तिमान ईश्वर की रचना हैं। लिंग-निरपेक्ष भाव से, समस्त मानव जाति की बेहतर सांसारिकता हेतु, समाज के ÷अंतिम, न्यूनतम, निम्नतम और गुमशुदा÷ व्यक्ति की सेवा करते हुए, अलैंगिक प्राणियों और फिर सभी जीवित प्राणियों की सेवा की ओर बढ़ने का हमारा महान लक्ष्य, दयालबाग जीवन पद्धति को प्रदर्शित करता है। इस संपूर्ण स्पेक्ट्रम को शुरू से अंत तक सर्वोत्कृष्टता के माध्यम से कवर करता है। यह कोई भव्य समापन नहीं है, बल्कि एक ऐसी प्रक्रिया है जो सभी जीवित प्राणियों की मुक्ति तक जारी रहेगी, जिसमें कोई भी निवासी निचले ध्रुव पर नहीं छोड़ा जाएगा।

दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट में संस्थापक दिवस केवल एक अनुष्ठान नहीं है; यह परम गुरु हुजूर डॉ. एमबी लाल साहब के दूरदर्शी पथ-प्रदर्शन और समग्र शिक्षा के प्रति डीईआई की स्थायी प्रतिबद्धता की मान्यता के लिए एक श्रद्धांजलि है। इस दिन, छात्र अपनी परियोजनाओं, सांस्कृतिक कार्यक्रमों, पाइप संगीत, उद्यमशीलता और अभिनव परिणामों को प्रदर्शित करके अपनी प्रतिभा और रचनात्मकता का प्रदर्शन करके सक्रिय रूप से भाग लेते हैं। यह उत्सव संस्थान की एकता, सहयोग और सफलता की भावना का प्रतीक है। जैसे-जैसे डीईआई मूल्य-आधारित शिक्षा, अनुसंधान और रचनात्मक गतिविधियों के माध्यम से अपने छात्रों की क्षमता को उजागर करना जारी रखता है, यह संस्थापक दिवस, प्रेरणा, प्रतिबद्धता और आने वाले सभी समय के लिए दिन दूनी रात चौगुनी विकास के आशीर्वाद हेतु उनके प्रति कृतज्ञता का प्रतीक है।

THE PRINT MAIL

VOL.4 NO121 BHOPAL FRIDAY 31 JANUARY 2025 PAGES-8 Rs.2

Founder's Day Celebration on 31st January at Dayalbagh Educational Institute

Located in the serene environs of Dayalbagh, Dayalbagh Educational Institute (DEI) holds special significance for Founder's Day on 31st January every year. The auspicious day of 31st January, the founding Director of Dayalbagh Educational Institute (Deemed to be University), is a special day to pay tribute and celebrate his holy feet.The Education Policy of DEI (1975), conceived and implemented by the supreme architect and founding Director of DEI (Deemed to be University), Pujya Dr. Makunda Bihari Lal Saheb, the seventh spiritual master of the Ra-Dha-Swa-A-Mi faith at Dayalbagh, is the precursor to the National Education Policy of 1986 and 2020. This visionary approach established DEI as an innovator, envisioning educational reforms many years ahead of the national agenda. DEI's educational framework is marked by its distinctive features, which emphasize the holistic development of a complete individual or superhuman. The process of creating superhumans has received renewed impetus through the Superhuman Evolutionary Scheme. These superhumans, spread across the world, have been imbibing Satsang culture from the early stages of their lives, and these superhumans, as ambassadors of

the Dayalbagh way of life globally in the future, will show humanity the right path to truly sustainable development. The interdisciplinary-options, work-based training and core curriculum of DEI's education policy ensure that students not only acquire academic excellence, but are also imbued with practical skills, cultural learning and a sense of social responsibility. The model of modern healthcare accommodation and self-care is set to be curated and scaled-up to cover all parts of the world for the benefit of humanity and thereafter for the benefit of all living beings. All living beings in the universe are the creation of Almighty God. Our great goal of serving the "last, least, lowest and lost" person of society, moving on to serving asexual beings and then all living beings, in a gender-neutral sense, for a better earthly well-being of all mankind, demonstrates the Dayalbagh way of life. Covering this entire spectrum from beginning to end through quintessence. This is not a grand finale, but a process that will continue till the liberation of all living beings, with no inhabitant left at the lower pole.Founders Day at Dayalbagh Educational Institute is not just a ritual; it is a tribute to the visionary path-breaking guidance of Param Guru Huzur Dr. MB Lal Saheb and recognition of DEI's enduring commitment to holistic education. On this day, students actively participate by showcasing their talent and creativity by showcasing their projects, cultural programs, pipe music, entrepreneurship and innovative outcomes. This celebration symbolizes the spirit of unity, collaboration and success of the institute. As DEI continues to unleash the potential of its students through value-based education, research and creative activities, this Founder's Day symbolizes gratitude towards them for the inspiration, commitment and blessings of growing by leaps and bounds for all times to come.

दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट ने 'स्थापना दिवस' धूमधाम से मनाया

आगरा, दाता संदेश। दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट एक प्रतिष्ठित संस्थान जो समग्र और संपूर्ण शिक्षा के लिए अपनी प्रतिबद्धता के लिए जाना जाता है, ने आज 31 जनवरी को अपने स्थापना दिवस को अद्वितीय उत्साह, जोश और उल्लास के साथ मनाया। यह दिन विशेष महत्व रखता है क्योंकि यह डीईआई के संस्थापक निदेशक परम गुरु हुजूर डॉ. एम बी लाल साहब की शुभ जयंती का प्रतीक है। राधास्वामी शिक्षण संस्थान की स्थापना के साथ 1917 में स्थापित, डीईआई की जड़ें लखनऊ विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. एम बी लाल साहब द्वारा तैयार की गई डीईआई की गहन दृष्टि और अभिनव शिक्षा नीति 1975 में हैं। संस्थान अपने छात्रों में सर्वांगीण विकास को बढ़ावा देने की प्रतिबद्धता के साथ वर्षों से उत्तरोत्तर विकसित हुआ है संस्थापक दिवस समारोह, जिसे ओपन डे के रूप में भी जाना जाता है, में उएकके छात्रों, शिक्षकों और कर्मचारियों द्वारा की गई उपलब्धियों और पहलों का शानदार प्रदर्शन हुआ। पूरा परिसर गतिविधियों, प्रदर्शनों और रंग-बिरंगी सजावट से जीवंत हो उठा, जिससे अपार खुशी और उत्सव का माहौल बन गया। इस वर्ष के उत्सव में डीईआई के छात्रों की लगन और कड़ी मेहनत को प्रदर्शित किया गया, जिन्होंने अपने अभिनव प्रोजेक्ट और रचनात्मक कार्यों को विभिन्न मीडिया जैसे कि ग्राफिकल चार्ट, वर्किंग मॉडल, डिस्प्ले बोर्ड और इंटरएक्टिव गतिविधियों के माध्यम से प्रस्तुत किया। डीईआई में संकाय और केंद्रीय स्थानों दोनों पर व्यवस्था की रूपरेखा सावधानीपूर्वक बनाई गई थी, जिससे आगरा के आम लोगों और आमंत्रित आगंतुकों को अध्ययन और कार्य के विभिन्न क्षेत्रों में नई पहल और उच्च प्रदर्शन का पता लगाने का मौका मिला

कुल 51 स्टॉल लगाए गए थे, जिनमें कपड़ा, सिरेमिक और मिट्टी के बर्तन, जैविक खेती, कृषि प्रौद्योगिकी, ग्रीन हाउस प्रौद्योगिकी,

पेटेंट, प्लेसमेंट, अनुसंधान, डेयरी प्रौद्योगिकी, 3-डी प्रिंटिंग, नैनो और क्वांटम विज्ञान, चेतना, ड्रोन, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस ऑनलाइन और दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम, चमड़ा प्रौद्योगिकी, अनुपम उपवन, उन्नत भारत अभियान, पूर्व छात्र नेटवर्क, कौशल विकास, खाद्य प्रसंस्करण, चिकित्सा शिविर, डीईआई शिक्षा नीति, डीईआई का इतिहास और केंद्रीय प्रशासन, प्रवेश और परीक्षा सहित कई अन्य क्षेत्रों से संबंधित मॉडल और गतिविधियों का प्रदर्शन किया गया। उत्तर प्रदेश के लगभग

50 स्कूलों के युवा स्कूली बच्चों ने भी परिसर का दौरा किया और डीईआई के कार्यों और उपलब्धियों का शानदार प्रदर्शन देखा, जिससे उन्हें अपने भविष्य के शैक्षणिक कैरियर और पेशेवर विकल्पों की योजना बनाने में भी मदद मिली। कुल मिलाकर, लगभग 10,000 लोग इस अवसर पर एकत्रित हुए और डीईआई परिसर का दौरा किया। डीईआई के छात्रों और कर्मचारियों द्वारा सुबह से देर दोपहर तक भक्ति संगीत का पाठ पूरे परिसर में गूंजता रहा, जिससे गहन दिव्यता और भक्ति का माहौल बन गया।

इस महत्वपूर्ण अवसर पर दयालबाग के कृषि-सह-परिशुद्धता खेती प्रक्षेत्र पर सुबह बुलाई गई सलाहकार समिति की बैठक के दौरान शिक्षा सलाहकार समिति के अध्यक्ष परम श्रद्धेय प्रोफेसर पी.एस. सत्संगी साहब की सम्मानित उपस्थिति ने इस अवसर की शोभा बढ़ाई। यह सभा विशेष रूप से डीईआई में उच्च शिक्षा कार्यक्रम का नेतृत्व करने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका के लिए श्रद्धेय डॉ. एमबी लाल साहब के चरण कमलों में हार्दिक श्रद्धा और कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए बुलाई गई थी। यह बैठक समग्र शैक्षिक कार्यक्रमों के कार्यान्वयन के माध्यम से प्राप्त असाधारण प्रगति को उजागर करने के लिए एक मंच के रूप में कार्य करती है। दयालबाग शैक्षणिक संस्थानों की शिक्षा सलाहकार समिति के अध्यक्ष परम पूज्य प्रोफेसर पी.एस. सत्संगी साहब के दिव्य मार्गदर्शन में इन कार्यक्रमों ने और अधिक प्रगति की और नवाचार के साथ उत्कृष्टता प्राप्त की है। इस विशेष अवसर पर, प्रो. सत्संगी ने अपने अमृतमय भाषण में, सर्वोच्च आध्यात्मिकता के भंडार के उच्चतम निवास से लगातार निकलने वाली 'धुन' (आध्यात्मिक ध्वनि या जाप) के सर्वोत्कृष्ट महत्व पर प्रकाश डाला, जिसे परम पुरुष पूरन धनी हुजूर स्वामी जी महाराज द्वारा दयालबाग, आगरा में स्थापित ह्ररा-धा-स्व-आ-मीह्र मत में वैज्ञानिक रूप से समझाया गया है। परम पूज्य प्रोफेसर पी.एस. सत्संगी साहब द्वारा दिए गए अमूल्य समय और आशीर्वाद ने संस्थापक दिवस समारोह में एक गहन आध्यात्मिक आयाम जोड़ा। संस्थापक दिवस समारोह ने अपनी शानदार विरासत का सम्मान करने और अपने दूरदर्शी नेताओं के उदार मार्गदर्शन में समग्र शिक्षा के सिद्धांतों को बनाए रखने के लिए उएककी गहरी प्रतिबद्धता का उदाहरण दिया उएक में संस्थापक दिवस केवल एक उत्सव नहीं है; यह उत्कृष्टता, नवाचार और अपने छात्रों के सर्वांगीण विकास के लिए संस्थान की प्रतिबद्धता का प्रमाण है। यह कार्यक्रम छात्रों को अपनी प्रतिभा दिखाने, एक-दूसरे से सीखने और संस्थान के विकास और प्रगति में योगदान देने के लिए एक सहकारी और सहयोगी मंच प्रदान करता है।

इस अवसर पर, उएकके प्रतिष्ठित कार्यक्रमों के अलावा, डॉ. बानी दयाल धीर द्वारा हाल ही में लॉन्च की गई पुस्तक "Travel Diaries with My Beloved Nana-Nani" की जानकारी भी साझा की गई। डॉ. बानी, जो उएकमें अंग्रेजी विभाग की सहायक प्रोफेसर हैं, ने इस पुस्तक में अपनी नाना-नानी के साथ की गई यात्रा के दौरान मिली अनमोल जीवन की सीखों और आशीवार्दों को साझा किया है। यह पुस्तक राधास्वामी मत के दृष्टिकोण से आध्यात्मिक स्थलों के महत्व को उजागर करती है और परिवार, विशेष रूप से नाना-नानी के साथ बिताए गए समय की अमूल्य महत्ता को दशार्ती है। डॉ. बानी की नानी को सत्संग जगत में 'रानी माँ' के रूप में सम्मानित किया जाता है, और उनके नाना राधास्वामी मत के 8वें संत सतगुरु के रूप में पूज्य हैं। इस पुस्तक में भारतीय संस्कृति, आध्यात्मिकता और जीवन के उच्चतम आदर्शों को प्रस्तुत किया गया है, जो डीईआई के छात्रों के लिए प्रेरणा का एक और स्रोत है Travel Diaries with My Beloved Nana-Nani न केवल एक यात्रा वृत्तांत है, बल्कि यह जीवन को समझने, परिवार के बंधनों की कद्र करने और अपने आध्यात्मिक और सांस्कृतिक धरोहर से जुड़ने की प्रेरणा भी देती है। डॉ. बानी का यह कार्य उएककी समग्र शिक्षा नीति और उसकी गहरी मानवीय और आध्यात्मिक प्रतिबद्धता के साथ पूर्ण रूप से मेल खाता है।